

जौन एलिया:

कवि, प्रेमी, या पागल?



अजब था उसको दिलजारी का अन्दाज़
वो बरसों बाद जब मुझ से मिला है
भला मैं पूछता उससे तो कैसे
मताएं-जां तुम्हारा नाम क्या है?

साल-हा-साल और एक लम्हा
कोई भी तो न इनमें बल आया
खुद ही एक दर पे मैंने दस्तक दी
खुद ही लड़का सा मैं निकल आया

दौर-ए-वावस्तगी गुज़ार के मैं
अहद-ए-वावस्तगी को भूल गया
यानी तुम वो हो, वाकई, हद है
मैं तो सचमुच सभी को भूल गया

रिश्ता-ए-दिल तेरे ज़माने में
रस्म ही क्या निवाहनी होती
मुस्कुराए हम उससे मिलते वक्त
रो न पड़ते अगर खुशी होती

दिल में जिनका निशान भी न रहा
क्यूँ न चेहरों पे अब वो रंग खिले
अब तो खाली है रुह, ज़ज्बों से
अब भी क्या हम तपाक से न मिलें

शर्म, दहशत, झिन्झक, परेशानी
नाज़ से काम क्यों नहीं लेतीं
आप, वो, जी, मगर ये सब क्या है
तुम मेरा नाम क्यों नहीं लेतीं

फारेहा निगारिना, तुमने मुझको लिखा है
"मेरे ख़त जला दीजे !
मुझको फ़िक्र रहती है !
आप उन्हें गँवा दीजे !
आपका कोई साथी, देख ले तो क्या होगा !
देखिये! मैं कहती हूँ ! ये बहुत बुरा होगा !"

मैं भी कुछ कहूँ तुमसे,

फारेहा निगारिना
ए बनाजुकी मीना
इत्र बेज नसरीना
रश्क-ए-सर्ब-ए-सिरमीना

मैं तुम्हारे हर ख़त को लौह-ए-दिल समझता हूँ !
लौह-ए-दिल जला दूँ क्या ?
जो भी सत्र है इनकी, कहकशां है रिश्तों की
कहकशां लुटा दूँ क्या ?
जो भी हर्फ़ है इनका, नक्श-ए-जान है जनानां
नक्श-ए-जान मिटा दूँ क्या ?
है सवाद-ए-बीनाई, इनका जो भी तुक्ता है
मैं उसे गंवा दूँ क्या ?
लौह-ए-दिल जला दूँ क्या ?
कहकशां लुटा दूँ क्या ?
नक्श-ए-जान मिटा दूँ क्या ?

मुझको लिख के ख़त जानम
अपने ध्यान में शायद
ख़वाब ख़वाब ज़ज्बों के
ख़वाब ख़वाब लम्हों में
यूँ ही बेख्यालाना
जुर्म कर गयी हो तुम
और ख्याल आने पर
उस से डर गयी हो तुम

जुर्म के तसव्वुर में
गर ये ख़त लिखे तुमने
फिर तो मेरी राय में
जुर्म ही किये तुमने

जुर्म क्यूँ किये जाएँ ?
ख़त ही क्यूँ लिखे जाएँ ?

उसके पहलू से लग के चलते हैं
हम कहाँ टालने से टलते हैं

मैं उसी तरह तो बहलता हूँ यारों

जॉन एलिया

और जेस तरह बहलते हैं

वोह है जान अब हर एक महफिल की
हम भी अब घर से कम निकलते हैं

क्या तकल्लुफ करें ये कहने में
जो भी खुश है हम उससे जलते हैं

है उसे दूर का सफर दरपेश
हम सँभाले नहीं सँभलते हैं

है अजब फैसले का सहरा भी
चल न पड़िए तो पाँव जलते हैं

हो रहा हूँ मैं किस तरह बर्बाद
देखने वाले हाथ मलते हैं

तुम बनो रंग, तुम बनो खुशबू
हम तो अपने सुखन में ढलते हैं

जी ही जी में वो जल रही होगी
चाँदनी में टहल रहीं होगी

चाँद ने तान ली है चादर-ए-अब्र
अब वो कपड़े बदल रही होगी

सो गई होगी वो शफ़क अन्दाम

सब्ज़ किन्दील जल रही होगी

सुर्ख और सब्ज़ वादियों की तरफ
वो मेरे साथ चल रही होगी

चढ़ते-चढ़ते किसी पहाड़ी पर
अब तो करवट बदल रही होगी

नील को झील नाक तक पहने
सन्दली जिस्म मल रही होगी

गाहे-गाहे बस अब तहो हो क्या
तुम से मिल कर बहुत खुशी हो क्या

मिल रही हो बड़े तपाक के साथ
मुझ को अक्सर भुला चुकी हो क्या

याद हैं अब भी अपने ख्वाब तुम्हें
मुझ से मिलकर उदास भी हो क्या

बस मुझे यूँ ही एक ख़याल आया
सोचती हो तो सोचती हो क्या

अब मेरी कोई ज़िन्दगी ही नहीं
अब भी तुम मेरी ज़िन्दगी हो क्या

क्या कहा इश्क जावेदानी है
आखरी बार मिल रही हो क्या?

है फ़ज़ा याँ की सोई-सोई सी
तुम बहुत तेज़ रोशनी हो क्या

मेरे सब तंज़ बेअसर ही रहे
तुम बहुत दूर जा चुकी हो क्या?

दिल में अब सोज़े-इंतज़ार नहीं
शम्मे उम्मीद बुझ गई हो क्या?

अब जुनूँ कब किसी के बस में है
उसकी खुशबू नफ़स-नफ़स में है

हाल उस सैद का सुनाईए क्या
जिसका सैयाद खुद क़फ़स में है

क्या है गर ज़िन्दगी का बस न चला
ज़िन्दगी कब किसी के बस में है

गैर से रहियो तू ज़रा होशियार
वो तेरे जिस्म की हवस में है

जॉन एलिया

वाशिकस्ता बड़ा हुआ हूँ मगर
दिल किसी नमा-ए-जरस में है

'जॉन' हम सबकी दस्त-रस में है
वो भला किसकी दस्त-रस में है

किसी लिवास की खुशबू जब उड़ के आती है
तेरे बदन की जुदाई बहुत सताती है

तेरे बगैर मुझे चैन कैसे पड़ता है
मेरे बगैर तुझे नींद कैसे आती है

रिश्ता-ए-दिल तेरे ज़माने में
रस्म ही क्या निभानी होती

मुस्कुराए हम उससे मिलते वक्त
रो न पड़ते अगर खुशी होती

दिल में जिनका कोई निशाँ न रहा
क्यों न चेहरो पे वो रंग खिले

अब तो खाली है रुह ज़ज्बों से
अब भी क्या तवाज़ से न मिले

हमारे शौक के आंसू दो, खुशहाल होने तक
तुम्हारे आरज़ू केसो का सौदा हो चुका होगा

अब ये शोर-ए-हव छूँ सुना है सारबानो ने
वो पागल काफिले की ज़िद में पीछे रह गया होगा

है निस-ए-शब वो दिवाना अभी तक घर नहीं आया
किसी से चन्दनी रातों का किस्सा छिड़ गया होगा

बोदलो! क्या यूँ हो दिन गुजर जायेंगे
सिर्फ़ ज़िन्दा रहे हम तो मर जायेंगे

ये खराब आतियाने, खिरद बाख्ता
सुबह होते ही सब काम पर जायेंगे

कितने दिलकश हो तुम कितना दिलजूँ हूँ मैं
क्या सितम है कि हम लोग मर जाएंगे

आगे असबे खूनी चादर और खूनी परचम निकले
जैसे निकला अपना जनाज़ा ऐसे जनाज़े कम निकले

दौर अपनी खुश-दर्दी रात बहुत ही याद आया
अब जो किताबे शौक निकाली सारे वरक बरहम निकले

है ज़राज़ी इस किस्से की, इस किस्से को खतम करो
क्या तुम निकले अपने घर से, अपने घर से हम निकले

मेरे कातिल, मेरे मसिहा, मेरी तरहा लासनी है
हाथो मे तो खंजर चमके, जेबों से मरहम निकले

'जॉन' शहादतजादा हूँ मैं और खूनी दिल निकला हूँ
मेरा जूनू उसके कूचे से कैसे बेमातम निकले

सर येह फोड़िए अब नदामत में
नीन्द आने लगी है फुरकत में

हैं दलीलें तेरे खिलाफ मगर
सोचता हूँ तेरी हिमायत में

इश्क को दरम्यान ना लाओ के मैं
चीखता हूँ बदन की उसरत में

ये कुछ आसान तो नहीं है कि हम
रुठते अब भी है मुर्खत में

जॉन एलिया

वो जो तामीर होने वाली थी
लग गई आग उस इमारत में

वो खला है कि सोचता हूँ मैं
उससे क्या गुफ्तगू हो खलबत में

उम्र गुजरेगी इम्तहान में क्या?
दाग ही देंगे मुझको दान में क्या?

ज़िन्दगी किस तरह बसर होगी
दिल नहीं लग रहा मुहब्बत में

मेरी हर बात बेअसर ही रही
नुस्खा है कुछ मेरे बयान में क्या?

मेरे कमरे का क्या बया कि यहाँ
खून थूका गया शरारत में

बोलते क्यो नहीं मेरे अपने
आबले पड़ गये ज़बान में क्या?

रुह ने इश्क का फरेब दिया
ज़िस्म को ज़िस्म की अदावत में

मुझको तो कोई टोकता भी नहीं
यही होता है खानदान में क्या?

अब फक्त आदतो की वर्जिश है
रुह शामिल नहीं शिकायत में

अपनी महरूमिया छुपाते हैं
हम गरीबो की आन-बान में क्या?

ऐ खुदा जो कही नहीं मौजूद
क्या लिखा है हमारी किस्मत में

वो मिले तो ये पूछना है मुझे
अब भी हूँ मैं तेरी अमान में क्या?

महक उठा है औँगन इस खबर से
वो खुशबू लौट आई है सफर से

यूँ जो तकता है आसमान को तू
कोई रहता है आसमान में क्या?

जुदाई ने उसे देखा सर-ए-बाम
दरीचे पर शफ़क के रंग बरसे

है नसीम-ए-वहार गर्दालूद
खाक उड़ती है उस मकान में क्या

मैं इस दीवार पर चढ़ तो गया था
उतारे कौन अब दीवार पर से

ये मुझे चैन क्यो नहीं पड़ता
एक ही शक्स था जहान में क्या?

गिला है एक गली से शहर-ए-दिल की
मैं लड़ता फिर रहा हूँ शहर भर से

एक ही मुश्दा सुभो लाती है
ज़हन में धूप फैल जाती है

उसे देखे ज़माने भर का ये चाँद
हमारी चाँदनी छाए तो तरसे

सोचता हूँ के तेरी याद आखिर
अब किसे रात भर जगाती है

मेरे मानन गुज़रा कर मेरी जान
कभी तू खुद भी अपनी रहगुज़र से

फर्श पर कागज़ो से फिरते हैं

जॉन एलिया

मेज पर गर्द जमती जाती है

मैं भी इज्जन-ए-नवागरी चाहूँ
बेदिली भी तो नज्ज हिलाती है

आप अपने से हम सुखन रहना
हमनशी सांस फूल जाती है

आज एक बात तो बताओ मुझे
ज़िन्दगी खबाब क्यो दिखाती है

क्या सितम है कि अब तेरी सूरत
गौर करने पर याद आती है

कौन इस घर की देख भाल करे
रोज़ एक चीज़ टूट जाती है

रुह प्यासी कहाँ से आती है
ये उदासी कहाँ से आती है

दिल है शब दो का तो ऐ उम्मीद
तू निदासी कहाँ से आती है

शौक में ऐशे वत्ल के हन्नाम
नाशिकासी कहाँ से आती है

एक ज़िन्दान-ए-बेदिली और शाम
ये सबासी कहाँ से आती है

तू है पहलू में फिर तेरी खुशबू
होके बासी कहाँ से आती है

कोई हालत नहीं ये हालत है
ये तो आशोभना सूरत है

अन्जुमन में ये मेरी खामोशी

गुर्दवारी नहीं है वहशत है

तुझ से ये गाह-गाह का शिकवा
जब तलक है बस गनिमत है

ख्वाहिशें दिल का साथ छोड़ गई
ये अज़ीयत बड़ी अज़ीयत है

लोग मसरूफ़ जानते हैं मुझे
या मेरा गम ही मेरी फुरसत है

तंज़ पैरा-या-ए-तबस्सुम में
इस तकल्लुफ़ की क्या ज़रूरत है

हमने देखा तो हमने ये देखा
जो नहीं है वो ख़बसूरत है

वार करने को जाँनिसार आए
ये तो इसार है इनायत है

गर्म-जोशी और इस कदर क्या बात
क्या तुम्हें मुझ से कुछ शिकायत है

अब निकल आओ अपने अन्दर से
घर में सामान की ज़रूरत है

आज का दिन भी ऐश से गुज़रा
सर से पाँव तक बदन सलामत है

हम के ए दिल सुखन सरापा थे
हम लबो पे नहीं रहे आबाद

जाने क्या बाकया हुआ
क्यू लोग अपने अन्दर नहीं रहे आबाद

शहर-ए-दिन मे अज्ब मुहल्ले थे
उनमें अक्सर नहीं रहे आबाद

मेरी अक्ल-ओ-होश की सब आसाईशें
तुमने सांचे में जूनूं के ढाल दी
कर लिया था मैंने अहद-ए-तर्क-ए-इश्क
तुमने फिर बाँहें गले में डाल दी

यूँ तो अपने कासिदाने-दिल के पास
जाने किस-किस के लिए पैगाम है
जो लिखे जाते थे औरो के नाम
मेरे वो खत भी तुम्हारे नाम हैं

ये तेरे खत, तेरी खुशबू, ये तेरे ख्वाब-ओ-ख्याल,
मताए-जाँ हैं तेरे कौल-ओ-कसम की तरह

गुजरता सालों मैंने इन्हे गिन के रखा है
किसी गरीब की जोड़ी हुई रकम की तरह

है मुहब्बत हयात की लज्जत
वरना कुछ लज्जत-ए-हयात नहीं
क्या इज़ाज़त है एक बात कहूँ
मगर खैर कोई बात नहीं

तुम हकीकत नहीं हो हसरत हो
जो मिले ख्वाब में वो दौलत हो

तुम हो खुशबू के ख्वाब की खुशबू
औए इतने ही बेमुरब्बत हो

तुम हो पहलू में पर करार नहीं
यानी ऐसा है जैसे फुरक्त हो

है मेरी आरज़ू के मेरे सिवा
तुम्हें सब शायरों से वहशत हो

किस तरह छोड़ दूँ तुम्हें जानाँ
तुम मेरी ज़िन्दगी की आदत हो

किसलिए देखते हो आईना
तुम तो खुद से भी खूबसूरत हो

दास्ताँ ख्रत्म होने वाली है
तुम मेरी आखिरी मुहब्बत हो

एक हुनर है जो कर गया हूँ मैं
सब के दिल से उतर गया हूँ मैं

कैसे अपनी हँसी को ज़ब्त करूँ
सुन रहा हूँ के घर गया हूँ मैं

क्या बताऊँ के मर नहीं पाता
जीते जी जब से मर गया हूँ मैं

अब है बस अपना सामना दरपेश
हर किसी से गुज़र गया हूँ मैं

वो ही नाज़-ओ-अदा, वो ही ग़मज़े
सर-ब-सर आप पर गया हूँ मैं

अजब इल्जाम हूँ ज़माने का
के यहाँ सब के सर गया हूँ मैं

कभी खुद तक पहुँच नहीं पाया
जब के वाँ उम्र भर गया हूँ मैं

तुम से जानां मिला हूँ जिस दिन से
बे-तरह, खुद से डर गया हूँ मैं

कू-ए-जानां में सोग बरपा है
के अचानक, सुधर गया हूँ मैं

तू भी चुप है मैं भी चुप हूँ यह कैसी तन्हाई है
तेरे साथ तेरी याद आई, क्या तू सचमुच आई है

जॉन एलिया

शायद वो दिन पहला दिन था पलकें बोझल होने का
मुझ को देखते ही जब उन की अँगड़ाई शरमाई है

उस दिन पहली बार हुआ था मुझ को रफ़ाकात का एहसास
जब उस के मलबूस की खुशबू घर पहुँचाने आई है

हुस्त से अर्ज ए शौक न करना हुस्त को ज्ञाक पहुँचाना है
हम ने अर्ज ए शौक न कर के हुस्त को ज्ञाक पहुँचाई है

हम को और तो कुछ नहीं सूझा अलबत्ता उस के दिल में
सोज़ ए रकबत पैदा कर के उस की नींद उड़ाई है

हम दोनों मिल कर भी दिलों की तन्हाई में भटकेंगे
पागल कुछ तो सोच यह तू ने कैसी शक्ति बनाई है

इश्क ए पैचान की संदल पर जाने किस दिन बेल चढ़े
क्यारी में पानी ठहरा है दीवारों पर काई है

हुस्त के जाने कितने चेहरे हुस्त के जाने कितने नाम
इश्क का पैशा हुस्त परस्ती इश्क बड़ा हरजाई है

आज बहुत दिन बाद मैं अपने कमरे तक आ निकला था
ज्यों ही दरवाज़ा खोला है उस की खुशबू आई है

एक तो इतना हृस है फिर मैं साँसें रोके बैठा हूँ
वीरानी ने झाड़ू दे के घर में धूल उड़ाई है

अखलाक न बरतेंगे मुदारा न करेंगे
अब हम किसी शख्स की परवाह न करेंगे

कुछ लोग कई लफ़ज़ ग़लत बोल रहे हैं
इसलाह मगर हम भी अब इसलाह न करेंगे

कमगोई के एक वस्फ़-ए-हिमाक़त है वहर तो
कमगोई को अपनाएँगे चहका न करेंगे

अब सहल पसंदी को बनाएँगे वातिरा

ता देर किसी बाब में सोचा न करेंगे

गुस्सा भी है तहज़ीब-ए-तआल्लुक का तलबगार
हम चुप हैं भरे बैठे हैं गुस्सा न करेंगे

कल रात बहुत गौर किया है सो हम ए "जॉन"
तय कर के उठे हैं के तमन्ना न करेंगे

दिल ने बफ़ा के नाम पर कार-ए-जफ़ा नहीं किया
खुद को हलाक कर लिया खुद को फ़िदा नहीं किया

कैसे कहें के तुझ को भी हमसे है वास्ता कोई
तूने तो हमसे आज तक कोई गिला नहीं किया

तू भी किसी के बाब में अहद-शिकन हो गालिबन
मैं ने भी एक शख्स का क़र्ज़ अदा नहीं किया

जो भी हो तुम पे मौतरिज़ उस को यही जवाब दो
आप बहुत शरीफ़ हैं आप ने क्या नहीं किया

जिस को भी शेख-ओ-शाह ने हुक्म-ए-खुदा दिया क्रारार
हमने नहीं किया वो काम हाँ बा-खुदा नहीं किया

निस्वत-ए-इल्म है बहुत हाकिम-ए-वक्त को अज़ीज़
उस ने तो कार-ए-जेहन भी बे-उलामा नहीं किया

खामोशी कह रही है, कान में क्या
आ रहा है मेरे, गुमान में क्या

अब मुझे कोई, टोकता भी नहीं
यही होता है, खानदान में क्या

बोलते क्यों नहीं, मेरे हक़ में
आबले^[1] पड़ गये, ज़बान में क्या

मेरी हर बात, बे-असर ही रही

जाँन एलिया

नुक्स है कुछ, मेरे बयान में क्या

वो मिले तो ये, पूछता है मुझे
अब भी हूँ मैं तेरी, अमान में क्या

शाम ही से, दुकान-ए-दीद है बंद
नहीं नुकसान तक, दुकान में क्या

यूं जो तकता है, आसमान को तू
कोई रहता है, आसमान में क्या

ये मुझे चैन, क्यूं नहीं पड़ता
इक ही शख्स था, जहान में क्या

चार सू मेहरबाँ हैं चौराहा
अजनबी शहर अजनबी बाज़ार
मेरी तहवील में हैं समेटे चार
कोई रास्ता कहीं तो जाता है
चार सू मेहरबाँ हैं चौराहा

हालत-ए-हाल के सबब हालत-ए-हाल ही गई
शौक में कुछ नहीं गया शौक की ज़िंदगी गई

एक ही हादसा तो है और वो यह के आज तक
बात नहीं कही गई बात नहीं सुनी गई

बाद भी तेरे जान-ए-जां दिल में रहा अजब समाँ
याद रही तेरी यां फिर तेरी याद भी गई

सैने छ्याल-ए-यार में की ना बसर शब्-ए-फिराक
जबसे वो चांदना गया तबसे वो चांदनी गयी

उसके बदन को दी नुमूद हमने सुखन में और फिर
उसके बदन के बास्ते एक कबा भी सी गयी

उसके उम्मीदे नाज़ का हमसे ये मान था की आप

उम्र गुजार दीजिये, उम्र गुजार दी गयी

उसके विसाल के लिए अपने कमाल के लिए
हालत-ए-दिल की थी खराब और खराब की गई

तेरा फिराक जान-ए-जां ऐश था क्या मेरे लिए
यानी तेरे फिराक में खूब शराब पी गई

उसकी गली से उठके मैं आन पड़ा था अपने घर
एक गली की बात थी और गली गली गयी

कितने ऐश उड़ाते होंगे कितने इतराते होंगे
जाने कैसे लोग वो होंगे जो उस को भाते होंगे

उस की याद की बाद-ए-सवा में और तो क्या होता होगा,
यूँ ही मेरे बाल हैं बिखरे और बिखर जाते होंगे

बंद रहे जिन का दरवाज़ा ऐसे घरों की मत पूछो,
दीवारें गिर जाती होंगी आँगन रह जाते होंगे

मेरी साँस उखड़ते ही सब बैन करेंगे रोएंगे,
यानी मेरे बाद भी यानी साँस लिये जाते होंगे

यारो कुछ तो बात बताओ उस की क़्यामत बाहों की,
वो जो सिमटते होंगे इन में वो तो मर जाते होंगे

खुद से हम इक नफस हिले भी कहाँ।
उस को ढूँढें तो वो मिले भी कहाँ।

खेमा-खेमा गुज़ार ले ये शब,
सुबह-दम ये क्राफिले भी कहाँ।

अब तामुल न कर दिल-ए- खुदकाम,
रूठ ले फिर ये सिलसिले भी कहाँ।

आओ आपस में कुछ गिले कर लें,

वर्ना यूँ है के फिर गिले भी कहाँ।

खुश हो सीने की इन ख़राशों पर,
फिर तनफ़क्स के ये सिले भी कहाँ।

हम तो जैसे यहाँ के थे ही नहीं।
धूप थे सायबाँ के थे ही नहीं।

रास्ते कारवाँ के साथ रहे,
मर्हले कारवाँ के थे ही नहीं।

अब हमारा मकान किस का है,
हम तो अपने मकाँ के थे ही नहीं।

इन को आँधि में ही विखरना था,
बाल-ओ-पर यहाँ के थे ही नहीं।

उस गली ने ये सुन के सब्र किया,
जाने वाले यहाँ के थे ही नहीं।

हो तेरी खाक-ए-आस्ताँ पे سलाम,
हम तेरे आस्ताँ के थे ही नहीं।

हर बार मेरे सामने आती रही हो तुम,
हर बार तुम से मिल के बिछड़ता रहा हूँ मैं,

तुम कौन हो ये खुद भी नहीं जानती हो तुम,
मैं कौन हूँ ये खुद भी नहीं जानता हूँ मैं,

तुम मुझ को जान कर ही पड़ी हो आज़ाब में,
और इस तरह खुद अपनी सज़ा बन गया हूँ मैं

तुम जिस ज़मीन पर हो मैं उस का खुदा नहीं
बस सर- ब-सर अज़ीयत-ओ-आज़ार ही रहो

बेज़ार हो गई हो बहुत ज़िन्दगी से तुम
जब बस में कुछ नहीं है तो बेज़ार ही रहो

तुम को यहाँ के साया-ए-परतौ से क्या ग़रज़
तुम अपने हङ्क में बीच की दीवार ही रहो

मैं इब्तदा-ए-इश्क में बेमहर ही रहा
तुम इन्तहा-ए-इश्क का मियार ही रहो

तुम खुन थूकती हो ये सुन कर खुशी हुई
इस रंग इस अदा में भी पुरकार ही रहो

मैंने ये कब कहा था के मुहब्बत में है नजात
मैंने ये कब कहा था के बफ़दार ही रहो

अपनी मता-ए-नाज़ लुटा कर मेरे लिये
बाज़ार-ए-इल्तफ़ात में नादार ही रहो

जब मैं तुम्हें निशात-ए-मुहब्बत न दे सका।
ग़म में कभी सुकून-ए-रफ़ाकत न दे सका।

जब मेरे सारे चराग़-ए-तमन्ना हवा के हैं।
जब मेरे सारे ख़वाब किसी बेवफ़ा के हैं।

फिर मुझे चाहने का तुम्हें कोई हक नहीं।
तन्हा कराहाने का तुम्हें कोई हक नहीं।

यह गम क्या दिल की आदत है? नहीं तो
किसी से कुछ शिकायत है? नहीं तो

है वो इक ख़वाब-ए-बे ताबीर इसको
भुला देने की नीयत है? नहीं तो

किसी के बिन किसी की याद के बिन
जिए जाने की हिम्मत है? नहीं तो

सूना सूना लगता हूँ

किसी सूरत भी दिल लगता नहीं? हाँ
तू कुछ दिन से यह हालत है? नहीं तो

तेरे इस हाल पर हैं सब को हैरत
तुझे भी इस पर हैरत है? नहीं तो

वो दरवेशी जो तज कर आ गया.....तू
यह दौलत उस की क्रीमत है? नहीं तो

हुआ जो कुछ यही मङ्गसूम था क्या
यही सारी हकायत है? नहीं तो

अज़ीयत नाक उम्मीदों से तुझको
अमन पाने की हसरत है? नहीं तो

मसलहत इस में क्या है मेरी
टूटा फूटा लगता हूँ

क्या तुम को इस हाल में भी
मैं दुनिया का लगता हूँ

कब का रोगी हूँ वैसे
शहर-ए-मसीहा लगता हूँ

मेरा तालू तर कर दो
सच-मुच प्यासा लगता हूँ

मुझ से कमा लो कुछ ऐसे
ज़िंदा मुर्दा लगता हूँ

अपना ख़ाका लगता हूँ
एक तमाशा लगता हूँ

मैं ने सहे हैं मक अपने
अब बे-चारा लगता हूँ.

आईनों को ज़ंग लगा
अब मैं कैसा लगता हूँ

बाहर गुज़ार दी कभी अंदर भी आएँगे
हम से ये पूछना कभी हम घर भी आएँगे

अब मैं कोई शख्स नहीं
उस का साया लगता हूँ

खुद आहनी नहीं हो तो पोशिश हो आहनी
यूँ शीशा ही रहोगे तो पत्थर भी आएँगे

सारे रिश्ते तिश्ना हैं
क्या मैं दरिया लगता हूँ

ये दशत-ए-बे-तरफ है गुमानों का मौज-खेज़
इस में सराब क्या के समंदर भी आएँगे

उस से गले मिल कर खुद को
तनहा तनहा लगता हूँ

आशुफ्तगी की फ़स्त का आग़ाज़ है अभी
आशुफ्तगाँ पलट के अभी घर भी आएँगे

खुद को मैं सब आँखों में
धूँदला धूँदला लगता हूँ

देखें तो चल के यार तिलिस्मात-ए-सम्त-ए-दिल
मरना भी पड़ गया तो चलो मर भी आएँगे

मैं हर लम्हा इस घर से
जाने वाला लगता हूँ

ये शख्स आज कुछ नहीं पर कल ये देखियो
उस की तरफ़ क़दम ही नहीं सर भी आएँगे

क्या हुए वो सब लोग के मैं

जॉन एलिया

दीद की एक आन में कार-ए-दवाम हो गया
वो भी तमाम हो गया मैं भी तमाम हो गया

अब मैं हूँ इक अज्ञाब में और अजब अज्ञाब में
जन्मत-ए-पुर-सुकूत में मुझ से कलाम हो गया

आह वो ऐश-ए-राज्ञ-ए-जाँ है वो ऐश-ए-राज्ञ-ए-जाँ
है वो ऐश-ए-राज्ञ-ए-जाँ शहर में आम हो गया

रिश्ता-ए-रंग-ए-जाँ मेरा निकहत-ए-नाज्ञ से तेरी
पुख्ता हुआ और इस क्रदर यानी के खाम हो गया

पूछ न वस्त का हिसाब हाल है अब बहुत ख्वाब
रिश्ता-ए-जिस्म-ओ-जाँ के बीच जिस्म हराम हो गया

शहर की दास्ताँ न पूछ है ये अजीब दास्ताँ
आने से शहरयार के शहर गुलाम हो गया

दिल की कहानियाँ बनीं कूचा-ब-कूचा कू-ब-कू
सह के मलाल-ए-शहर को शहर में नाम हो गया

'जौन' की तिश्नगी का था खूब ही माजरा के जो
मीना-ब-मीना मय-ब-मय जाम-ब-जाम हो गया

नाफ़-प्याले को तेरे देख लिया मुगाँ ने जान
सारे ही मय-कदे का आज काम तमाम हो गया

उस की निगाह उठ गई और मैं उठ के रह गया
मेरी निगाह झुक गई और सलाम हो गया.

दिल का दयार-ए-ख्वाब में दूर तलक गुज़र रहा
पाँव नहीं थे दरमियाँ आज बड़ा सफ़र रहा

हो न सका हमें कभी अपना ख़्याल तक नसीब
नक्श किसी ख़्याल का लौह-ए-ख़्याल पर रहा

नक्श-गरों से चाहिए नक्श ओ निगार का हिसाब
रंग की बात मत करो रंग बहुत बिखर रहा

जाने गुमाँ की वो गली ऐसी जगह है कौन सी
देख रहे हो तुम के मैं फिर वहीं जा के मर रहा

दिल मेरे दिल मुझे भी तुम अपने ख्वास में रखो
याराँ तुम्हारे बाब में मैं ही न मोतबर रहा

शहर-ए-फिराक-ए-यार से आई है इक खबर मुझे
कूचा-ए-याद-ए-यार से कोई नहीं उभर रहा

दिल को दुनिया का है सफ़र दर-पेश
और चारों तरफ़ है घर दर-पेश

है ये आलम अजीब और यहाँ
माजरा है अजीब-तर दर-पेश

दो जहाँ से गुज़र गया फिर भी
मैं रहा खुद को उम्र भर दर-पेश

अब मैं कू-ए-अबस शिताब चलूँ
कई इक काम हैं उधर दर-पेश

उस के दीदार की उम्मीद कहाँ
जब के है दीद को नज़र दर-पेश

अब मेरी जान बच गई यानी
एक क्रातिल की है सिपर दर-पेश

किस तरह कूच पर कमर बाँधूँ
एक रह-ज्ञन की है कमर दर-पेश

ख़लवत-ए-नाज्ञ और आईना
खुद-निगर को है खुद-निगर दर-पेश

दिल ने किया है कस्द-ए-सफर घर समेट लो
जाना है इस दयार से मंज़र समेट लो

आज्ञादगी में शर्त भी है एहतियात की
परवाज़ का है इज्जन मगर पर समेट लो

हमला है चार सू दर-ओ-दीवार-ए-शहर का
सब जंगलों को शहर के अंदर समेट लो

बिखरा हुआ हूँ सरसर-ए-शाम-ए-फिराक से
अब आ भी जाओ और मुझे आ कर समेट लो

रखता नहीं है कोई न-गुफ्ता का याँ हिसाब
जो कुछ है दिल में उस को लबों पर समेट लो

गँवाई किस की तमन्ना में ज़िंदगी मैं ने
वो कौन है जिसे देखा नहीं कभी मैं ने

तेरा ख़्याल तो है पर तेरा वजूद नहीं
तेरे लिए तो ये महफिल सजाई थी मैं ने

तेरे अदम को गवारा न था वजूद मेरा
सो अपनी बेख़-कनी मैं कमी न की मैं ने
हैं मेरी ज़ात से मंसूब सद-फ़साना-ए-इश्क़
और एक सतर भी अब तक नहीं लिखी मैं ने

खुद अपने इश्वा ओ अंदाज़ का शहीद हूँ मैं
खुद अपनी ज़ात से बरती है बे-रुख़ी मैं ने

मेरे हरीफ़ मेरी यक्का-ताज़ियों पे निसार
तमाम उम्र हलीफ़ों से जंग की मैं ने

ख़राश-ए-नगमा से सीना छिला हुआ है मेरा
फुराँ के तर्क न की नगमा-परवरी मैं ने

दवा से फ़ाएदा मक्कूद था ही कब के फ़क्कत
दवा के शौक मैं सेहत तबाह की मैं ने

ज़बाना-ज़न था जिगर-सोज़ तिश्वरी का अज्ञाव
सो जौफ़-ए-सीना मैं दोज़ख उड़ेल ली मैं ने

सुरुर-ए-मय पे भी ग़ालिब रहा शूऊर मेरा
के हर रिआयत-ए-गम जहन मैं रखी मैं ने

गम-ए-शूऊर कोई दम तो मुझ को मोहलत दे
तमाम उम्र जलाया है अपना जी मैं ने

इलाज ये है के मजबूर कर दिया जाऊँ
वगर्ना यूँ तो किसी की नहीं सुनी मैं ने

रहा मैं शाहिद-ए-तन्हा नशीन-ए-मसनद-ए-गम
और अपने कर्ब-ए-अना से गरज़ रखी मैं ने

हमारे ज़ख़-ए-तमन्ना पुराने हो गए हैं
के उस गली मैं गए अब ज़माने हो गए हैं

तुम अपने चाहने वालों की बात मत सुनियो
तुम्हारे चाहने वाले दिवाने हो गए हैं

वो ज़ुल्फ़ धूप मैं फुर्कत की आई है जब याद
तो बादल आए हैं और शामियाने हो गए हैं

जो अपने तौर से हम ने कभी गुज़ारे थे
वो सुब्ह ओ शाम तो जैसे फ़साने हो गए हैं

अजब महक थी मेरे गुल तेरे शविस्ताँ की
सो बुलबुलों के वहाँ आशियाने हो गए हैं

हमारे बाद जो आएँ उन्हें मुवारक हो
जहाँ थे कुंज वहाँ कार-खाने हो गए हैं

इक ज़ख़ भी यारान-ए-बिस्मिल नहीं आने का
मक्कतल मैं पड़े रहिए क़ातिल नहीं आने का

जॉन एलिया

अब कूच करो यारो सहरा से के सुनते हैं
सहरा में अब आइंदा महमिल नहीं आने का

वाइज्ज को ख्रावे में इक दावत-ए-हक्क दी थी
मैं जान रहा था वो जाहिल नहीं आने का

बुनियाद-ए-जहाँ पहले जो थी वही अब भी है
यूँ हथ तो यारान-ए-यक-दिल नहीं आने का

बुत है के खुदा है वो माना है न मानूँगा
उस शोख से जब तक मैं खुद मिल नहीं आने का

गर दिल की ये महफिल है खर्चा भी हो फिर दिल का
बाहर से तो सामान-ए-महफिल नहीं आने का

वो नाफ प्याले से सर-मस्त करे वरना
हो के मैं कभी उस का क़ाइल नहीं आने का

जाने कहाँ गया वो जो अभी यहाँ था
वो जो अभी यहाँ था वो कौन था कहाँ था

ता लम्हा-ए-गुज़िश्ता ये जिस्म और साए
ज़िंदा थे राएँगाँ में जो कुछ था राएँगाँ था

अब जिस की दीद का है सौदा हमारे सर में
वो अपनी ही नज़र में अपना ही इक सामाँ था

क्या क्या न खून थूका मैं उस गली में यारो
सच जानना वहाँ तो जो फ़न था राएँगाँ था

ये बार कर गया है पहलू से कौन मुझ पर
था मैं ही दाएँ बाएँ और मैं ही दरमियाँ था

उस शहर की हिफाज़त करनी थी हम को जिस में
आँधी की थीं फ़सीलें और गर्द का मकाँ था

थी इक अजब फ़ज़ा सी इमकान-ए-ख़ाल-ओ-ख़द की

था इक अजब मुसविर और वो मेरा गुमाँ था

उमें गुज़र गई थीं हम को यकीन से बिछड़े
और लम्हा इक गुमाँ का सदियों में बे-अमाँ था

जब ढूबता चला मैं तारीकियों की तह में
तह में था इक दरीचा और उस में आसमाँ था

कोई दम भी मैं कब अंदर रहा हूँ
लिए हैं साँस और बाहर रहा हूँ

धुएं में साँस हैं साँसों में पल हैं
मैं रौशन-दान तक बस मर रहा हूँ

फ़ना हर दम मुझे गिनती रही है
मैं इक दम का था और दिन भर रहा हूँ

ज़रा इक साँस रोका तो लगा यूँ
के इतनी देर अपने घर रहा हूँ

ब-जुज़ अपने मयस्सर है मुझे क्या
सो खुद से अपनी जेबें भर रहा हूँ

हमेशा ज़ख्म पहुँचे हैं मुझी को
हमेशा मैं पस-ए-लक्ष्कर रहा हूँ

लिटा दे नींद के विस्तर पे ऐ रात
मैं दिन भर अपनी पलकों पर रहा हूँ

क्या हो गया है गेसू-ए-ख़म-दार को तेरे
आज़ाद कर रहे हैं गिरफ़तार को तेरे

अब तू है मुद्दतों से शब ओ रोज़ रू-ब-रू
कितने ही दिन गुज़र गए दीदार को तेरे

कल रात चोब-दार समेत आ के ले गया

जैन एलिया

इक गोल-ए-तरह-दार सर-ए-दार को तेरे

अब इतनी कुंद हो गई धार ऐ यक्किं तेरी
अब रोकता नहीं है कोई वार को तेरे

अब रिश्ता-ए-मरीज़-ओ-मसीहा हुआ है ख्वार
सब पेशा-वर समझते हैं बीमार को तेरे

बाहर निकल के आ दर-ओ-दीवार-ए-ज्ञात से
ले जाएगी हवा दर ओ दीवार को तेरे

ऐ रंग उस में सूद है तेरा ज़ियाँ नहीं
खुशबू उड़ा के ले गई ज़ंगार को तेरे

लाज़िम है अपने आप की इमदाद कुछ करूँ
सीने में वो ख़ला है के ईजाद कुछ करूँ

हर लम्हा अपने आप में पाता हूँ कुछ कभी
हर लम्हा अपने आप में ईजाद कुछ करूँ

रू-कार से तो अपनी मैं लगता हूँ पाए-दार
बुनियाद रह गई पा-ए-बुनियाद कुछ करूँ

तारी हुआ है लम्हा-ए-मौजूद इस तरह
कुछ भी न याद आए अगर याद कुछ करूँ

मौसम का मुझ से कोई तक़ाज़ा है दम-ब-दम
बे-सिलसिला नहीं नफ़स-ए-बाद कुछ करूँ

न पूछ उस की जो अपने अंदर छुपा
शनीमत के मैं अपने बाहर छुपा

मुझे याँ किसी पे भरोसा नहीं
मैं अपनी निगाहों से छूप कर छुपा

पहुँच मुख्विरों की सुखन तक कहाँ

सो मैं अपने होटों पे अक्सर छुपा

मेरी सुन न रख अपने पहलू में दिल
उसे तू किसी और के घर छुपा

यहाँ तेरे अंदर नहीं मेरी ख़ैर
मेरी जाँ मुझे मेरे अंदर छुपा

ख़्यालों की आमद में ये ख़ार-ज्ञार
है तीरों की यलगार तू सर छुपा

रंज है हालत-ए-सफ़र हाल-ए-क्याम रंज है
सुब्ह-ब-सुब्ह रंज है शाम-ब-शाम रंज है

उस की शमीम-ए-ज़ुल्फ़ का कैसे हो शुक्रिया अदा
जब के शमीम रंज है जब के मशाम रंज है

सैद तो क्या के सैद-कार खुद भी नहीं ये जानता
दाना भी रंज है यहाँ यानी के दाम रंज है

मानी-ए-जावेदान-ए-जाँ कुछ भी नहीं मगर ज़ियाँ
सारे कलीम हैं ज़ुबूँ सारा कलाम रंज है

बाबा अलिफ़ मेरी नुमूद रंज है आप के ब-कौल
क्या मेरा नाम भी है रंज हाँ तेरा नाम रंज है

कासा गदा-गरी का है नाफ़ प्याला यार का
भूक है वो बदन तमाम वस्ल तमाम रंज है

जीत के कोई आए तब हार के कोई आए तब
जौहर-ए-तेज़ शर्म है और नियाम रंज है

दिल ने पढ़ा सबक़ तमाम बूद तो है क़लक़ तमाम
हाँ मेरा नाम रंज है हाँ तेरा नाम रंज है

पैक-ए-क़ज़ा है दम-ब-दम 'जैन' क़दम क़दम शुमार
लगिज़िश-ए-गाम रंज है हुस्त-ए-ख़िराम रंज है

जॉन एलिया

बाबा अलिफ़ ने शब कहा नश्शा-ब-नश्शा कर गिले
जुरआ-ब-जुरआ रंज है जाम-ब-जाम रंज है

आन पे हो मदार क्या बूद के रोजगार का
दम हमा-दम है दूँ ये दम वहम-ए-दवाम रंज है

रज्म है खून का हजर कोई बहाए या बहे
रुस्तम ओ ज़ाल हैं मलाल यानी के साम रंज है

शाम हुर्इ है यार आए हैं यारों के हम-राह चलें
आज बहाँ क़ब्बाली होगी 'जौन' चलो दर-गाह चलें

अपनी गलियाँ अपने रमने अपने जंगल अपनी हवा
चलते चलते बज्द में आएँ राहों में बे-राह चलें

जाने बस्ती में जंगल हो या जंगल में बस्ती हो
है कैसी कुछ ना-आगाही आओ चलो ना-गाह चलें

कूच अपना उस शहर तरफ़ है नामी हम जिस शहर के हैं
कपड़े फाड़े ख़ाक-ब-सर हों और ब-इज़्ज़-ओ-जाह चलें

राह में उस की चलना है तो ऐश करा दें क़दमों को
चलते जाएँ चलते जाएँ यानी ख़ातिर छवाह चलें

शर्मिंदगी है हम को बहुत हम मिले तुम्हें
तुम सर-ब-सर खुशी थे मगर ग़म मिले तुम्हें

मैं अपने आप में न मिला इस का ग़म नहीं
ग़म तो ये है के तुम भी बहुत कम मिले तुम्हें

है जो हमारा एक हिसाब उस हिसाब से
आती है हम को शर्म के पैहम मिले तुम्हें

तुम को जहान-ए-शौक़-ओ-तमन्ना में क्या मिला
हम भी मिले तो दरहम ओ बरहम मिले तुम्हें

अब अपने तौर ही में नहीं तुम सो काश के
खुद में खुद अपना तौर कोई दम मिले तुम्हें

इस शहर-ए-हीला-जू में जो महरम मिले मुझे
फ़रियाद जान-ए-जाँ वही महरम मिले तुम्हें

देता हूँ तुम को खुश्की-ए-मिज़गाँ की मैं दुआ
मतलब ये है के दामन-ए-पुर-नम मिले तुम्हें

मैं उन में आज तक कभी पाया नहीं गया
जानाँ जो मेरे शौक़ के आलम मिले तुम्हें

तुम ने हमारे दिल में बहुत दिन सफर किया
शर्मिंदा हैं के उस में बहुत ख़म मिले तुम्हें

यूँ हो के और ही कोई हब्बा मिले मुझे
हो यूँ के और ही कोई आदम मिले तुम्हें

सोचा है के अब कार-ए-मसीहा न करेंगे
वो खून भी थूकेगा तो परवा न करेंगे

इस बार वो तलबी है के रूठे भी नहीं हम
अब के वो लड़ाई है के झगड़ा न करेंगे

याँ उस के सलीके के ही आसार तो क्या हम
इस पर भी ये कमरा तह ओ बाला न करेंगे

अब नगमा-तराज़ान-ए-बर-अफरोज़ता ऐ शहर
वासोऽक्षत कहेंगे ग़ज़ल इंशा न करेंगे

ऐसा है के सीने में सुलगती हैं ख़राशें
अब साँस भी हम लेंगे तो अच्छा न करेंगे

तुझ में पड़ा हुआ हूँ हरकत नहीं है मुझ में
हालत न पूछियो तू हालत नहीं है मुझ में

जॉन एलिया

अब तो नजर में आ जा बाँहों के घर में आ जा
ऐ जान तेरी कोई सूरत नहीं है मुझ में

ऐ रंग रंग में आ आगोश-ए-तंग में आ
बातें ही रंग की हैं रंगत नहीं है मुझ में

अपने में ही किसी की हो रू-ब-रूई मुझ को
हूँ खुद से रू-ब-रू मैं हिम्मत नहीं है मुझ में

अब तो सिमट के आ जा और रूह में समा जा
वैसे किसी की प्यारे बुसअत नहीं है मुझ में

शीशे के इस तरफ से मैं सब को तक रहा हूँ
मरने की भी किसी को फुर्सत नहीं है मुझ में

तुम मुझ को अपने रम में ले जाओ साथ अपने
अपने से ऐ ग़ज़ालो वहशत नहीं है मुझ में

यादों का हिसाब रख रहा हूँ
सीने में अज़ाब रख रहा हूँ

तुम कुछ कहे जाओ क्या कहूँ मैं
बस दिल में जवाब रख रहा हूँ

दामन में किए हैं जमा गिर्दब
जेबों में हबाब रख रहा हूँ

आएगा वो नखवती सो मैं भी
कमरे को खराब रख रहा हूँ

तुम पर मैं सहीफा-हा-ए-कोहना
इक ताज़ा किताब रख रहा हूँ

गाहे गाहे बस अब यहीं हो क्या
तुमसे मिल कर बहुत खुशी हो क्या

मिल रही हो बड़े तपाक के साथ
मुझको यक्सर भुला चुकी हो क्या

याद हैं अब भी अपने ख्वाब तुम्हे
मुझसे मिलकर उदास भी हो क्या

बस मुझे यूँही एक छ्याल आया
सोचती हो तो सोचती हो क्या

अब मेरी कोई जिंदगी ही नहीं
अब भी तुम मेरी जिंदगी हो क्या

क्या कहा इश्क जाविदानी है
आखरी बार मिल रही हो क्या

हाँ फ़ज़ा यहाँ की सोई सोई सी है
तो बहुत तेज रौशनी हो क्या

मेरे सब तंज बेअसर ही रहे
तुम बहुत दूर जा चुकी हो क्या

दिल में अब सोजे इंतज़ार नहीं
शमे उम्मीद बुझ गयी हो क्या

अजब इक शोर सा बरपा है कहीं
कोई खामोश हो गया है कहीं

है कुछ ऐसा के जैसे ये सब कुछ
अब से पहले भी हो चुका है कहीं

जो यहाँ से कहीं न जाता था
वो यहाँ से चला गया है कहीं

तुझ को क्या हो गया, के चीजों को
कहीं रखता है, ढूँढता है कहीं

तू मुझे ढूँढ, मैं तुझे ढुँढ
कोई हम में से रह गया है कहीं

इस कमरे से हो के कोई विदा
इस कमरे में छुप गया है कहीं

शौक का रंग बुझ गया , याद के ज़ख्म भर गए
क्या मेरी फसल हो चुकी, क्या मेरे दिन गुज़र गए?

हम भी हिजाब दर हिजाब छुप न सके, मगर रहे
वोह भी हुजूम दर हुजूम रहे न सके, मगर गए

रहगुज़र-ए-ख्याल में दोष बा दोष थे जो लोग
वक्त की गर्द ओ बाद में जाने कहाँ बिखर गए

शाम है कितनी बे तपाक, शहर है कितना सहम नाक
हम नफसो कहाँ तो तुम, जाने ये सब किधर गए

आज की रात है अजीब, कोई नहीं मेरे करीब
आज सब अपने घर रहे, आज सब अपने घर गए

हिफ्ज़-ए- हयात का ख्याल हम को बहुत बुरा लगा
पास बा हुजूम-ए-मारका, जान के भी सिपर गए

मैं तो सापों के दरमियान, कब से पड़ा हूँ निम-जान
मेरे तमाम जान-निसार मेरे लिए तो मर गए

रोनक-ए-बज़म-ए-ज़िन्दगी, तुरफा हैं तेरे लोग भी
एक तो कभी न आये थे, आये तो रुठ कर गए

खुश नफास-ए-बे-नवा, बे-खबरां-ए-खुश अदा
तीरह-नसीब था मगर शहर में नाम कर गए

आप में 'जॉन अलिया' सोचिये अब धरा है क्या
आप भी अब सिधारिये, आप के चारागर गए

जॉन ! गुज़ार्त-ए-वक्त की हालत-ए-हाल पर सलाम
उस के फ़िराक को दुआ, उसके विसाल पर सलाम

तेरा सितम भी था करम, तेरा करम भी था सितम
बंदगी तेरी तेग को, और तेरी ढाल पर सलाम

सूद-ओ-जयां के फर्क का अब नहीं हम से वास्ता
सुबह को अर्ज़-ए-कोर्निश, शाम-ए-मलाल पर सलाम

अब तो नहीं है लज्जत-ए-मुमकिन-ए-शौक भी नसीब
रोज़-ओ-शब ज़माना-ए-शौक महाल पर सलाम

हिज़-ए-सवाल के है दिन, हिज़-ए-जवाब के हैं दिन
उस के जवाब पर सलाम, अपने सवाल पर सलाम

जाने वोह रंग-ए-मस्ती-ए-ख्वाब-ओ-ख्याल क्या हुई?
इशरत-ए-ख्वाब की सना, ऐश-ए-ख्याल पर सलाम

अपना कमाल था अजब, अपना ज़वाल था अजब
अपने कमाल पर दारूद, अपने ज़वाल पर सलाम

तमन्ना कई थे, आज दिल में उनके लिए
लेकिन वो आज न आये मुझे मिलने के लिए

काम करने का जोश न रहा
उनके बिना कोई होश न रहा

कैसे समझाऊ उन्हें की वो मेरी ज़िन्दगी है
मेरी ज़िन्दगी को कैसे समझाऊ के मोहब्बत मेरी बंदगी है

लेकिन आज मैं काम ज़रूर करूँगा
उनके बिना मैं नहीं मरूँगा

कमबछत यह दिल है कि मानता नहीं
यह क्या मजबूरी हैं उनके बिना काम बनता नहीं

काश उनको भी मेरी याद सताये
यह मोहब्बत का रोग उन्हें जलाये

आज लब-ए-गुहर-फिशाँ आप ने वा नहीं किया
तज्जिकरा-ए-खजिस्ता-ए-आब-ओ-हवा नहीं किया
कैसे कहें कि तुझ को भी हम से है वास्ता कोई
तू ने तो हम से आज तक कोई गिला नहीं किया
जाने तिरी नहीं के साथ कितने ही जब्र थे कि थे
मैं ने तिरे लिहाज में तेरा कहा नहीं किया
मुझ को ये होश ही न था तू मिरे बाजुओं में है
यानी तुझे अभी तलक मैं ने रिहा नहीं किया
तू भी किसी के बाब में अहद-शिकन हो गालिबन
मैं ने भी एक शख्स का क्रज्ज अदा नहीं किया
हाँ वो निगाह-ए-नाज भी अब नहीं माजरा-तलब
हम ने भी अब की फ़स्ल में शोर बपा नहीं किया

आखिरी बार आह कर ली है
मैं ने खुद से निबाह कर ली है
अपने सर इक बला तो लेनी थी
मैं ने वो जुल्फ़ अपने सर ली है
दिन भला किस तरह गुजारोगे
वस्ल की शब भी अब गुजर ली है
जॉ-निसारों पे वार क्या करना
मैं ने बस हाथ में सिपर ली है
जो भी माँगो उधार दूँगा मैं
उस गली में दुकान कर ली है
मेरा कश्कोल कब से खाली था
मैं इस में शराब भर ली है
और तो कुछ नहीं किया मैं ने
अपनी हालत तबाह कर ली है
शैख आया था मोहतसिब को लिए
मैं ने भी उन की वो खबर ली है

अभी फरमान आया है वहाँ से
कि हट जाऊँ मैं अपने दरमियाँ से
यहाँ जो है तनफ़ुस ही मैं गुम है
परिंदे उड़ रहे हैं शाख-ए-जाँ से
दरीचा बाज़ है यादों का और मैं
हवा सुनता हूँ पेड़ों की जबाँ से
जमाना था वो दिल की ज़िंदगी का
तिरी फुर्कत के दिन लाऊँ कहाँ से
था अब तक म'अरका बाहर का दरपेश
अभी तो घर भी जाना है यहाँ से
फुलाँ से थी ग़ज़ल बेहतर फुलाँ की
फुलाँ के ज़ख्म अच्छे थे फुलाँ से
खबर क्या दूँ मैं शहर-ए-रफ़तगाँ की
कोई लौटे भी शहर-ए-रफ़तगाँ से
यही अंजाम क्या तुझ को हवस था
कोई पूछे तो मीर-ए-दास्ताँ से

अब वो घर इक वीराना था बस वीराना ज़िंदा था
सब आँखें दम तोड़ चुकी थीं और मैं तन्हा ज़िंदा था
सारी गली सुनसान पड़ी थी बाद-ए-फ़ना के पहरे में
हिज्र के दालान और आँगन में बस इक साया ज़िंदा था
वो जो कबूतर उस मूखे में रहते थे किस देस उड़े
एक का नाम नवाज़िदा था और इक का बाज़िदा था
वो दोपहर अपनी रुख्सत की ऐसा-वैसा धोका थी
अपने अंदर अपनी लाश उठाए मैं झूटा ज़िंदा था
थीं वो घर रातें भी कहानी वादे और फिर दिन गिनना
आना था जाने वाले को जाने वाला ज़िंदा था
दस्तक देने वाले भी थे दस्तक सुनने वाले भी
था आबाद मोहल्ला सारा हर दरवाज़ा ज़िंदा था
पीले पत्तों को सह-पहर की वहशत पुर्सा देती थी
आँगन में इक औंधे घड़े पर बस इक कव्वा ज़िंदा था

ऐ कू-ए-यार तेरे जमाने गुजर गए
जो अपने घर से आए थे वो अपने घर गए
अब कौन ज़ख्म ओ जहर से रक्खेगा सिलसिला
जीने की अब हवस है हमें हम तो मर गए
अब क्या कहूँ कि सारा मोहल्ला है शर्मसार
मैं हूँ अजाब में कि मिरे ज़ख्म भर गए
हम ने भी ज़िंदगी को तमाशा बना दिया
उस से गुजर गए कभी खुद से गुजर गए
था रन भी ज़िंदगी का अजब तुर्फ़ माजरा
यानी उठे तो पॉव मगर 'जौन' सर गए

ऐ वस्ल कुछ यहाँ न हुआ कुछ नहीं हुआ
उस जिस्म की मैं जाँ न हुआ कुछ नहीं हुआ
तू आज मेरे घर में जो मेहमाँ है ईद है
तू घर का मैजबाँ न हुआ कुछ नहीं हुआ
खोली तो है ज़बान मगर इस की क्या बिसात
मैं ज़हर की दुकाँ न हुआ कुछ नहीं हुआ
क्या एक कारोबार था वो रब्त-ए-जिस्म-ओ-जाँ
कोई भी राएगाँ न हुआ कुछ नहीं हुआ
कितना जला हुआ हूँ बस अब क्या बताऊँ मैं
आलम धुआँ धुआँ न हुआ कुछ नहीं हुआ
देखा था जब कि पहले-पहल उस ने आईना
उस वक्त मैं वहाँ न हुआ कुछ नहीं हुआ
वो इक जमाल जलवा-फ़िशाँ है ज़र्मी ज़र्मी
मैं ता-ब-आसमाँ न हुआ कुछ नहीं हुआ
मैं ने बस इक निगाह में तय कर लिया तुझे
तू रंग-ए-बेकराँ न हुआ कुछ नहीं हुआ
गुम हो के जान तू मिरी आगोश-ए-जात मैं
बे-नाम-ओ-बे-निशाँ न हुआ कुछ नहीं हुआ
हर कोई दरमियान है ऐ माजरा-फ़रोश
मैं अपने दरमियाँ न हुआ कुछ नहीं हुआ

ऐ सुब्ल मैं अब कहाँ रहा हूँ
ख्वाबों ही मैं स़र्फ़ हो चुका हूँ
सब मेरे बगैर मुतमझन हैं
मैं सब के बगैर जी रहा हूँ
क्या है जो बदल गई है दुनिया
मैं भी तो बहुत बदल गया हूँ
गो अपने हजार नाम रख लैं
पर अपने सिवा मैं और क्या हूँ
मैं जुर्म का ए'तिराफ़ कर के
कुछ और है जो छुपा गया हूँ
मैं और फ़क्रत उसी की ख्वाहिश
अख्लाक मैं झूट बोलता हूँ
इक शख्स जो मुझ से वक्त ले कर
आज आ न सका तो खुश हुआ हूँ
हर शख्स से बे-नियाज हो जा
फिर सब से ये कह कि मैं खुदा हूँ
चरके तो तुझे दिए हैं मैं ने
पर खून भी मैं ही थूकता हूँ
रोया हूँ तो अपने दोस्तों में
पर तुझ से तो हँस के ही मिला हूँ
ऐ शख्स मैं तेरी जुस्तुजू से
बे-जार नहीं हूँ थक गया हूँ
मैं शाम ओ सहर का नग्मा-गर था
अब थक के कराहने लगा हूँ
कल पर ही रखो वफ़ा की बातें
मैं आज बहुत बुझा हुआ हूँ

अपना खाका लगता हूँ
 एक तमाशा लगता हूँ
 आईनों को ज़ंग लगा
 अब मैं कैसा लगता हूँ
 अब मैं कोई शख्स नहीं
 उस का साया लगता हूँ
 सारे रिश्ते तिशा हैं
 क्या मैं दरिया लगता हूँ
 उस से गले मिल कर खुद को
 तन्हा तन्हा लगता हूँ
 खुद को मैं सब आँखों में
 धुँदला धुँदला लगता हूँ
 मैं हर लम्हा इस घर से
 जाने वाला लगता हूँ
 क्या हुए वो सब लोग कि मैं
 सूना सूना लगता हूँ
 मस्लहत इस में क्या है मेरी
 टूटा फूटा लगता हूँ
 क्या तुम को इस हाल में भी
 मैं दुनिया का लगता हूँ
 कब का रोगी हूँ वैसे
 शहर-ए-मसीहा लगता हूँ
 मेरा तालू तर कर दो
 सच-मुच प्यासा लगता हूँ
 मुझ से कमा लो कुछ पैसे
 जिंदा मुर्दा लगता हूँ
 मैं ने सहे हैं मक्र अपने
 अब बेचारा लगता हूँ

अपने सब यार काम कर रहे हैं
 और हम हैं कि नाम कर रहे हैं
 तेग़-बाजी का शौक अपनी जगह
 आप तो क़त्ल-ए-आम कर रहे हैं
 दाद-ओ-तहसीन का ये शोर है क्यूँ
 हम तो खुद से कलाम कर रहे हैं
 हम हैं मसरूफ-ए-इंतिजाम मगर
 जाने क्या इंतिजाम कर रहे हैं
 है वो बेचारगी का हाल कि हम
 हर किसी को सलाम कर रहे हैं
 एक क़त्ताला चाहिए हम को
 हम ये एलान-ए-आम कर रहे हैं
 क्या भला सागर-ए-सिफाल कि हम
 नाफ-प्याले को जाम कर रहे हैं
 हम तो आए थे अर्ज-ए-मतलब को
 और वो एहतिराम कर रहे हैं
 न उठे आह का धुआँ भी कि वो
 कू-ए-दिल में खिराम कर रहे हैं
 उस के होंठों पे रख के होंट अपने
 बात ही हम तमाम कर रहे हैं
 हम अजब हैं कि उस के कूचे में
 बे-सबब धूम-धाम कर रहे हैं

बाहर गुजार दी कभी अंदर भी आएँगे
हम से ये पूछना कभी हम घर भी आएँगे
खुद आहनी नहीं हो तो पोशिश हो आहनी
यूँ शिशा ही रहोगे तो पत्थर भी आएँगे
ये दश्त-ए-बे-तरफ है गुमानों का मौज-खेज
इस में सराब क्या कि समुंदर भी आएँगे
आशुप्तगी की फ़स्ल का आगाज है अभी
आशुप्तगाँ पलट के अभी घर भी आएँगे
देखें तो चल के यार तिलिस्मात-ए-सम्त-ए-दिल
मरना भी पड़ गया तो चलो मर भी आएँगे
ये शख्स आज कुछ नहीं पर कल ये देखियो
उस की तरफ क़दम ही नहीं सर भी आएँगे

बहुत दिल को कुशादा कर लिया क्या
जमाने भर से व'अदा कर लिया क्या
तो क्या सच-मुच जुदाई मुझ से कर ली
तो खुद अपने को आधा कर लिया क्या
हुनर-मंदी से अपनी दिल का सफ्हा
मिरी जाँ तुम ने सादा कर लिया क्या
जो यक्सर जान है उस के बदन से
कहो कुछ इस्तिफ़ादा कर लिया क्या
बहुत कतरा रहे हो मुग्बचों से
गुनाह-ए-तर्क-ए-बादा कर लिया क्या
यहाँ के लोग कब के जा चुके हैं
सफ़र जादा-ब-जादा कर लिया क्या
उठाया इक क़दम तू ने न उस तक
बहुत अपने को माँदा कर लिया क्या
तुम अपनी कज-कुलाही हार बैठी
बदन को बे-लिबादा कर लिया क्या
बहुत नजदीक आती जा रही हो
बिछड़ने का इरादा कर लिया क्या

बजा इरशाद फ़रमाया गया है
कि मुझ को याद फ़रमाया गया है
इनायत की हैं ना-मुम्किन उमीदें
करम ईजाद फ़रमाया गया है
हैं अब हम और ज़द है हादसों की
हमें आजाद फ़रमाया गया है
जरा उस की पुर-अहवाली तो देखें
जिसे बर्बाद फ़रमाया गया है
नसीम-ए-सज्जगी थे हम सो हम को
गुबार-उफ्ताद फ़रमाया गया है
मुबारक फ़ाल-ए-नेक ऐ खुसरू-ए-शहर
मुझे फ़रहाद फ़रमाया गया है
सनद बख्शी है इश्क-ए-बे-गरज की
बहुत ही शाद फ़रमाया गया है
सलीके को लब-ए-फ़रियाद तेरे
अदा की दाद फ़रमाया गया है
कहाँ हम और कहाँ हुस-ए-सर-ए-बाम
हमें बुनियाद फ़रमाया गया है

बंद बाहर से मिरी जात का दर है मुझ में
मैं नहीं खुद मैं ये इक आम खबर है मुझ में
इक अजब आमद ओ शुद है कि न माजी है न हाल
'जौन' बरपा कई नस्लों का सफर है मुझ में
है मिरी उम्र जो हैरान तमाशाई है
और इक लम्हा है जो ज़ेर-ओ-ज़बर है मुझ में
क्या तरसता हूँ कि बाहर के किसी काम आए
वो इक अम्बोह कि बस खाक-बसर है मुझ में
झूबने वालों के दरिया मुझे पायाब मिले
उस में अब झूब रहा हूँ जो भँवर है मुझ में
दर-ओ-दीवार तो बाहर के हैं ढाने वाले
चाहे रहता नहीं मैं पर मिरा घर है मुझ में
मैं जो पैकार मैं अंदर की हूँ बे-तेग-ओ-ज़िरह
आखिरश कौन है जो सीना-सिपर है मुझ में
म'अरका गर्म है बे-तौर सा कोई हर-दम
न कोई तेग सलामत न सिपर है मुझ में
जख्म-हा-जख्म हूँ और कोई नहीं खूँ का निशाँ
कौन है वो जो मिरे खून में तर है मुझ में

जॉन एलिया

बे-करारी सी बे-करारी है
वस्ल है और फ़िराक तारी है
जो गुजारी न जा सकी हम से
हम ने वो जिंदगी गुजारी है
नघरे क्या हुए कि लोगों पर
अपना साया भी अब तो भारी है
बिन तुम्हारे कभी नहीं आई
क्या मिरी नींद भी तुम्हारी है
आप में कैसे आँऊँ मैं तुझ बिन
सॉस जो चल रही है आरी है
उस से कहियो कि दिल की गलियों में
रात दिन तेरी इंतिजारी है
हिज्र हो या विसाल हो कुछ हो
हम हैं और उस की यादगारी है
इक महक सम्त-ए-दिल से आई थी
मैं ये समझा तिरी सवारी है
हादसों का हिसाब है अपना
वर्ना हर आन सब की बारी है
खुश रहे तू कि जिंदगी अपनी
उम्र भर की उमीद-वारी है

बे-वली क्या यूँही दिन गुजर जाएँगे
सिर्फ़ जिंदा रहे हम तो मर जाएँगे
रक्स है रंग पर रंग हम-रक्स हैं
सब बिछड़ जाएँगे सब बिखर जाएँगे
ये खराबातियान-ए-खिरद-बाख्ता
सुङ्ख होते ही सब काम पर जाएँगे
कितनी दिलकश हो तुम कितना दिल-जू हूँ मैं
क्या सितम है कि हम लोग मर जाएँगे
है ग्रनीमत कि असरार-ए-हस्ती से हम
बे-खबर आए हैं बे-खबर जाएँगे

चारागर भी जो यूँ गुजर जाएँ
फिर ये बीमार किस के घर जाएँ
आज का गम बड़ी क्रयामत है
आज सब नक्श-ए-गम उभर जाएँ
है बहारों की रुह सोग-नशी
सारे औराक-ए-गुल बिखर जाएँ
नाज-परवर्दा बे-नवा मजबूर
जाने वाले ये सब किधर जाएँ
कल का दिन हाए कल का दिन ऐ 'जौन'
काश इस रात हम भी मर जाएँ
है शब-ए-मातम-ए-मसीहाई
अश्क दामन में ता-सहर जाएँ
मरने वाले तिरे जनाजे में
क्या फ़क्रत हम ब-चश्म-तर जाएँ
काश दिल खून हो के बह जाए
काश ओँखे लहू में भर जाएँ

दिल-ए-बर्बाद को आबाद किया है मैं ने
आज मुद्दत में तुम्हे याद किया है मैं ने
ज़ौक-ए-परवाज-ए-तब-ओ-ताब अता फ़रमा कर
सैद को लाइक-ए-स्याद किया है मैं ने
तल्खी-ए-दौर-ए-गुजिश्ता का तसव्वुर कर के
दिल को फिर माइल-ए-फ़रयाद किया है मैं ने
आज इस सोज-ए-तसव्वुर की खुशी में ऐ दोस्त
तैर-ए-सब्र को आजाद किया है मैं ने
हो के इसरार-ए-गम-ए-ताजा से मजबूर-ए-फुगँ
चश्म को अश्क-ए-तर इमदाद किया है मैं ने
तुम जिसे कहते थे हंगामा-पसंदी मेरी
फिर वही तर्ज-ए-गम ईजाद किया है मैं ने
फिर गवारा है मुझे इश्क की हर इक मुश्किल
ताजा फिर शेव-ए-फ़रहाद किया है मैं ने

चलो बाद-ए-बहारी जा रही है
पिया-जी की सवारी जा रही है
शुमाल-ए-जावेदान-ए-सञ्ज-ए-जॉ से
तमन्ना की अमारी जा रही है
फुगँ ऐ दुश्मनी दार-ए-दिल-ओ-जॉ
मिरी हालत सुधारी जा रही है
जो इन रोजों मिरा गम है वो ये है
कि गम से बुर्दबारी जा रही है
है सीने में अजब इक हश्र बरपा
कि दिल से बे-करारी जा रही है
मैं पैहम हार कर ये सोचता हूँ
वो क्या शय है जो हारी जा रही है
दिल उस के रू-ब-रू है और गुम-सुम
कोई अर्जी गुजारी जा रही है
वो सय्यद बचा हो और शैख के साथ
मियाँ इज्जत हमारी जा रही है
है बरपा हर गली में शोर-ए-नगमा
मिरी फरियाद मारी जा रही है
वो याद अब हो रही है दिल से रुख्सत
मियाँ प्यारों की प्यारी जा रही है
दरेगा! तेरी नजदीकी मियाँ-जान
तिरी दूरी पे वारी जा रही है
बहुत बद-हाल हैं बस्ती तिरे लोग
तो फिर तू क्यूँ सँवारी जा रही है
तिरी मरहम-निगाही ऐ मसीहा!
खराश-ए-दिल पे वारी रही है
खराबे में अजब था शोर बरपा
दिलों से इंतिज़ारी जा रही है

दिल का दयार-ए-ख्वाब में दूर तलक गुजर रहा
पाँव नहीं थे दरमियाँ आज बड़ा सफर रहा
हो न सका हमें कभी अपना ख्याल तक नसीब
नक्श किसी ख्याल का लौह-ए-ख्याल पर रहा
नक्श-गरों से चाहिए नक्श ओ निगार का हिसाब
रंग की बात मत करो रंग बहुत बिखर रहा
जाने गुमाँ की वो गली ऐसी जगह है कौन सी
देख रहे हो तुम कि मैं फिर वहीं जा के मर रहा
दिल मिरे दिल मुझे भी तुम अपने ख्वास में रखो
याराँ तुम्हारे बाब में मैं ही न मोतबर रहा
शहर-ए-फिराक-ए-यार से आई है इक खबर मुझे
कूचा-ए-याद-ए-यार से कोई नहीं उभर रहा

दीद की एक आन में कार-ए-दवाम हो गया
वो भी तमाम हो गया मैं भी तमाम हो गया
अब मैं हूँ इक अजाब में और अजब अजाब में
जन्मत-ए-पुर-सुकूत में मुझ से कलाम हो गया
आह वो ऐश-ए-राज-ए-जॉ हाए वो ऐश-ए-राज-ए-जॉ
हाए वो ऐश-ए-राज-ए-जॉ शहर में आम हो गया
रिश्ता-ए-रंग-ए-जॉ मिरा निकहत-ए-नाज से तिरी
पुख्ता हुआ और इस कदर यानी कि खाम हो गया
पूछ न वस्ल का हिसाब हाल है अब बहुत खराब
रिश्ता-ए-जिस्म-ओ-जॉ के बीच जिस्म हराम हो गया
शहर की दास्ताँ न पूछ है ये अजीब दास्ताँ
आने से शहरयार के शहर गुलाम हो गया
दिल की कहानियाँ बनीं कूचा-ब-कूचा कू-ब-कू
सह के मलाल-ए-शहर को शहर में नाम हो गया
'जौन' की तिश्री का था खूब ही माजरा कि जो
मीना-ब-मीना मय-ब-मय जाम-ब-जाम हो गया
नाफ-प्याले को तिरे देख लिया मुगँ ने जान
सारे ही मय-कदे का आज काम तमाम हो गया
उस की निगाह उठ गई और मैं उठ के रह गया
मेरी निगाह झुक गई और सलाम हो गया

दिल की हर बात ध्यान में गुजरी
सारी हस्ती गुमान में गुजरी
अज्जल-ए-दास्ताँ से इस दम तक
जो भी गुजरी इक आन में गुजरी
जिस्म मुद्दत तिरी उकूबत की
एक इक लम्हा जान में गुजरी
जिंदगी का था अपना ऐश मगर
सब की सब इम्तिहान में गुजरी
हाए वो नावक-ए-गुजारिश-ए-रंग
जिस की जुम्बिश कमान में गुजरी
वो गदाई गली अजब थी कि वाँ
अपनी इक आन-बान में गुजरी
यूँ तो हम दम-ब-दम जर्मी पे रहे
उम्र सब आसमान में गुजरी
जो थी दिल-ताएरों की मोहलत-ए-बूद
ता जर्मी वो उड़ान में गुजरी
बूद तो इक तकान है सो खुदा
तेरी भी क्या तकान में गुजरी

दिल ने किया है क्रस्द-ए-सफर घर समेट लो
जाना है इस दयार से मंज़र समेट लो
आजादगी में शर्त भी है एहतियात की
परवाज़ का है इज्जन मगर पर समेट लो
हमला है चार सू दर-ओ-दीवार-ए-शहर का
सब जंगलों को शहर के अंदर समेट लो
बिखरा हुआ हूँ सरसर-ए-शाम-ए-फ़िराक से
अब आ भी जाओ और मुझे आ कर समेट लो
रखता नहीं है कोई न-गुफ्ता का याँ हिसाब
जो कुछ है दिल में उस को लबों पर समेट लो

दिल ने वफा के नाम पर कार-ए-वफा नहीं किया
खुद को हलाक कर लिया खुद को फ़िदा नहीं किया
खीरा-सरान-ए-शौक का कोई नहीं है जुम्बा-दार
शहर में इस गिरोह ने किस को खफा नहीं किया
जो भी हो तुम पे मो'तरिज उस को यही जवाब दो
आप बहुत शरीफ हैं आप ने क्या नहीं किया
निस्बत इल्म है बहुत हाकिम-ए-वक़त को अजीज
उस ने तो कार-ए-जहल भी बे-उलमा नहीं किया
जिस को भी शैख ओ शाह ने हुक्म-ए-खुदा दिया करार
हम ने नहीं क्या वो काम हाँ ब-खुदा नहीं किया

दिल को दुनिया का है सफर दरपेश
और चारों तरफ है घर दरपेश
है ये आलम अजीब और यहाँ
माजरा है अजीब-तर दरपेश
दो जहाँ से गुजर गया फिर भी
मैं रहा खुद को उम्र भर दरपेश
अब मैं कू-ए-अबस शिताब चलूँ
कई इक काम हैं उधर दरपेश
उस के दीदार की उम्मीद कहाँ
जब कि है दीद को नज़र दरपेश
अब मिरी जान बच गई यानी
एक क्रातिल की है सिपर दरपेश
किस तरह कूच पर कमर बाँधूँ
एक रहज्जन की है कमर दरपेश
खल्वत-ए-नाज और आईना
खुद-निगर को है खुद-निगर दरपेश

एक ही मुज्ज्वा सुब्ब लाती है
धूप आँगन में फैल जाती है
रंग-ए-मौसम है और बाद-ए-सबा
शहर कूचों में खाक उड़ाती है
फ्रश पर काग़ज उड़ते फिरते हैं
मेज पर गर्द जमती जाती है
सोचता हूँ कि उस की याद आखिर
अब किसे रात भर जगाती है
मैं भी इज्ज-ए-नवा-गरी चाहूँ
बे-दिली भी तो लब हिलाती है
सो गए पेड़ जाग उठी खुशबू
जिंदगी ख्वाब क्यूँ दिखाती है
उस सरापा वफ़ा की फुर्कत में
ख्वाहिश-ए-गैर क्यूँ सताती है
आप अपने से हम-सुखन रहना
हम-नशीं साँस फूल जाती है
क्या सितम है कि अब तिरी सूरत
गौर करने पे याद आती है
कौन इस घर की देख-भाल करे
रोज इक चीज टूट जाती है

एक साया मिरा मसीहा था
कौन जाने वो कौन था क्या था
वो फ़क्रत सेहन तक ही आती थी
मैं भी हुजरे से कम निकलता था
तुझ को भूला नहीं वो शख्स कि जो
तेरी बाँहों में भी अकेला था
जान-लेवा थीं ख्वाहिशें वर्ना
वस्ल से इंतिजार अच्छा था
बात तो दिल-शिकन है पर यारो
अक्ल सच्ची थी इश्क झूटा था
अपने मेआर तक न पहुँचा मैं
मुझ को खुद पर बड़ा भरोसा था
जिस्म की साफ़-गोई के बा-वस्फ
रुह ने कितना झूट बोला था

गाहे गाहे बस अब यही हो गया
 तुम से मिल कर बहुत खुशी हो क्या
 मिल रही हो बड़े तपाक के साथ
 मुझ को यकसर भुला चुकी हो क्या
 याद हैं अब भी अपने ख्वाब तुम्हें
 मुझ से मिल कर उदास भी हो क्या
 बस मुझे यूँही इक ख्याल आया
 सोचती हो तो सोचती हो क्या
 अब मिरी कोई जिंदगी ही नहीं
 अब भी तुम मेरी जिंदगी हो क्या
 क्या कहा इश्क जावेदानी है!
 आखिरी बार मिल रही हो क्या
 हाँ फ़ज़ा याँ की सोई सोई सी है
 तो बहुत तेज रौशनी हो क्या
 मेरे सब तंज बे-असर ही रहे
 तुम बहुत दूर जा चुकी हो क्या
 दिल में अब सोज-ए-इंतिजार नहीं
 शम-ए-उम्मीद बुझ गई हो क्या
 इस समुंदर पे तिश्रा-काम हूँ मैं
 बान तुम अब भी बह रही हो क्या

गँवाई किस की तमन्ना में जिंदगी में ने
 वो कौन है जिसे देखा नहीं कभी मैं ने
 तिरा ख्याल तो है पर तिरा वजूद नहीं
 तिरे लिए तो ये महफिल सजाई थी मैं ने
 तिरे अदम को गवारा न था वजूद मिरा
 सो अपनी बेख-कनी मैं कमी न की मैं ने
 हैं मेरी जात से मंसूब सद-फ़साना-ए-इश्क
 और एक सतर भी अब तक नहीं लिखी मैं ने
 खुद अपने इश्वा ओ अंदाज का शहीद हूँ मैं
 खुद अपनी जात से बरती है बे-रुखी मैं ने
 मिरे हरीफ मिरी यक्का-ताजियों पे निसार
 तमाम उम्र हलीफों से जंग की मैं ने
 खराश-ए-नग्मा से सीना छिला हुआ है मिरा
 फुगाँ कि तर्क न की नग्मा-परवरी मैं ने
 दवा से फ़ाएदा मक्कुद था ही कब कि फ़क्रत
 दवा के शौक मैं सेहत तबाह की मैं ने
 जबाना-जन था जिगर-सोज तिश्रगी का अजाब
 सो जौफ-ए-सीना मैं दोजख उंडेल ली मैं ने
 सुरुर-ए-मय पे भी ग़ालिब रहा शुज़र मिरा
 कि हर रिआयत-ए-ग़म ज़ेहन मैं रखी मैं ने
 ग़म-ए-शुज़र कोई दम तो मुझ को मोहलत दे
 तमाम उम्र जलाया है अपना जी मैं ने
 इलाज ये है कि मजबूर कर दिया जाऊँ
 वगरना यूँ तो किसी की नहीं सुनी मैं ने
 रहा मैं शाहिद-ए-तन्हा नशीन-ए-मसनद-ए-ग़म
 और अपने कर्ब-ए-अना से गरज रखी मैं ने

घर से हम घर तलक गए होंगे
अपने ही आप तक गए होंगे
हम जो अब आदमी हैं पहले कभी
जाम होंगे छलक गए होंगे
वो भी अब हम से थक गया होगा
हम भी अब उस से थक गए होंगे
शब जो हम से हुआ मुआफ करो
नहीं पी थी बहक गए होंगे
कितने ही लोग हिर्स-ए-शोहरत में
दार पर खुद लटक गए होंगे
शुक्र है इस निगाह-ए-कम का मियाँ
पहले ही हम खटक गए होंगे
हम तो अपनी तलाश में अक्सर
अज समा-ता-समक गए होंगे
उस का लश्कर जहाँ-तहाँ यानी
हम भी बस बे-कुमक गए होंगे
'जौन' अब्बाह और ये आलम
बीच में हम अटक गए होंगे

हालत-ए-हाल के सबब हालत-ए-हाल ही गई
शौक में कुछ नहीं गया शौक की जिंदगी गई
तेरा फ़िराक जान-ए-जाँ ऐश था क्या मिरे लिए
यानी तिरे फ़िराक में खूब शराब पी गई
तेरे विसाल के लिए अपने कमाल के लिए
हालत-ए-दिल कि थी खराब और खराब की गई
एक ही हादसा तो है और वो ये कि आज तक
बात नहीं कही गई बात नहीं सुनी गई
ब'अद में तेरे जान-ए-जाँ दिल में रहा अजब समाँ
याद रही तिरी यहाँ फिर तिरी याद भी गई
उस के बदन को दी नुमूद हम ने सुखन में और फिर
उस के बदन के वास्ते एक क़बा भी सी गई
मीना-ब-मीना मय-ब-मय जाम-ब-जाम जम-ब-जम
नाफ़ प्याले की तिरे याद अजब सही गई
कहनी है मुझ को एक बात आप से यानी आप से
आप के शहर-ए-वस्ल में लज्जत-ए-हिज्र भी गई
सेहन-ए-खयाल-ए-यार में की न बसर शब-ए-फ़िराक
जब से वो चाँद ना गया जब से वो चाँदनी गई

है बिखरने को ये महफिल-ए-रंग-ओ-बू तुम कहाँ जाओगे हम कहाँ जाएँगे
हर तरफ हो रही है यहीं गुफ्तगू तुम कहाँ जाओगे हम कहाँ जाएँगे
हर मता-ए-नफस नज़्र-ए-आहंग की हम को याराँ हवस थी बहुत रंग की
गुल-जर्मी से उबलने को है अब लहू तुम कहाँ जाओगे हम कहाँ जाएँगे
अव्वल-ए-शब का महताब भी जा चुका सेहन-ए-मय-खाना से अब उफुक में कहीं
आशिर-ए-शब है खाली हैं जाम-ओ-सुबू तुम कहाँ जाओगे हम कहाँ जाएँगे
कोई हासिल न था आरजू का मगर सानेहा ये है अब आरजू भी नहीं
वक्त की इस मसाफत में बे-आरजू तुम कहाँ जाओगे हम कहाँ जाएँगे
किस क़दर दूर से लौट कर आए हैं यूँ कहो उम्र बर्बाद कर आए हैं
था सराब अपना सुरमाया-ए-जुस्तजू तुम कहाँ जाओगे हम कहाँ जाएँगे
इक जुनूँ था कि आबाद हो शहर-ए-जाँ और आबाद जब शहर-ए-जाँ हो गया
हैं ये सरगोशियाँ दर-ब-दर कू-ब-कू तुम कहाँ जाओगे हम कहाँ जाएँगे
दश्त में रक्स-ए-शौक-ए-बहार अब कहाँ बाद-पैमाइ-ए-दीवाना-वार अब कहाँ
बस गुजरने को है मौसम-ए-हाव-हू तुम कहाँ जाओगे हम कहाँ जाएँगे
हम हैं रुस्वा-कुन-ए-दिल्ली-ओ-लखनऊ अपनी क्या जिंदगी अपनी क्या आबरू
'मीर' दिल्ली से निकलने गए लखनऊ तुम कहाँ जाओगे हम कहाँ जाएँगे

है फसीलें उठा रहा मुझ में
जाने ये कौन आ रहा मुझ में
'जॉन' मुझ को जिला-वतन कर के
वो मिरे बिन भला रहा मुझ में
मुझ से उस को रही तलाश-ए-उमीद
सो बहुत दिन छुपा रहा मुझ में
था क्रयामत सुकूत का आशोब
हश्श सा इक बपा रहा मुझ में
पस-ए-पर्दा कोई न था फिर भी
एक पर्दा खिंचा रहा मुझ में
मुझ में आ के गिरा था इक ज़ख्मी
जाने कब तक पड़ा रहा मुझ में
इतना खाली था अंदरूँ मेरा
कुछ दिनों तो खुदा रहा मुझ में

हमारे ज़ख्म-ए-तमन्ना पुराने हो गए हैं
कि उस गली में गए अब जगाने हो गए हैं
तुम अपने चाहने वालों की बात मत सुनियो
तुम्हारे चाहने वाले दिवाने हो गए हैं
वो ज़ुल्फ धूप में फुर्कत की आई है जब याद
तो बादल आए हैं और शामियाने हो गए हैं
जो अपने तौर से हम ने कभी गुजारे थे
वो सुब्ल ओ शाम तो जैसे फसाने हो गए हैं
अजब महक थी मिरे गुल तिरे शबिस्तों की
सो बुलबुलों के वहाँ आशियाने हो गए हैं
हमारे बाद जो आए उन्हें मुबारक हो
जहाँ थे कुंज वहाँ कार-खाने हो गए हैं

हम आँधियों के बन में किसी कारवाँ के थे
जाने कहाँ से आए हैं जाने कहाँ के थे
ऐ जान-ए-दास्तौं तुझे आया कभी खयाल
वो लोग क्या हुए जो तिरी दास्तौं की थे
हम तेरे आस्तौं पे ये कहने को आए हैं
वो खाक हो गए जो तिरे आस्तौं के थे
मिल कर तपाक से न हमें कीजिए उदास
खातिर न कीजिए कभी हम भी यहाँ के थे
क्या पूछते हो नाम-ओ-निशान-ए-मुसाफिराँ
हिन्दोस्तौं में आए हैं हिन्दोस्तान के थे
अब खाक उड़ रही है यहाँ इंतिजार की
ऐ दिल ये बाम-ओ-दर किसी जान-ए-जहाँ के थे
हम किस को दें भला दर-ओ-दीवार का हिसाब
ये हम जो हैं जमीं के न थे आसमाँ के थे
हम से छिना है नाफ-पियाला तिरा मियाँ
गोया अजल से हम सफ-ए-लब-तिश्रगाँ के थे
हम को हकीकतों ने किया है खराब-ओ-ख्वार
हम ख्वाब-ए-ख्वाब और गुमान-ए-गुमाँ के थे
सद-याद-ए-याद 'जॉन' वो हंगाम-ए-दिल कि जब
हम एक गाम के न थे पर हफ्त-ख्वाँ के थे
वो रिश्ता-हा-ए-जात जो बर्बाद हो गए
मेरे गुमाँ के थे कि तुम्हारे गुमाँ के थे

हम जी रहे हैं कोई बहाना किए बगैर
उस के बगैर उस की तमन्ना किए बगैर
अम्बार उस का पर्दा-ऐ-हुरमत बना मियाँ
दीवार तक नहीं गिरी पर्दा किए बगैर
याराँ वो जो है मेरा मसीहा-ए-जान-ओ-दिल
बे-हद अजीज है मुझे अच्छा किए बगैर
मैं बिस्तर-ए-ख्याल पे लेटा हूँ उस के पास
सुह-ए-अजल से कोई तकाज़ा किए बगैर
उस का है जो भी कुछ है मिरा और मैं मगर
वो मुझ को चाहिए कोई सौदा किए बगैर
ये ज़िंदगी जो है उसे माअना भी चाहिए
वादा हमें कुबूल है ईफा किए बगैर
ऐ क्रातिलों के शहर बस इतनी ही अर्ज है
मैं हूँ न क्रत्तल कोई तमाशा किए बगैर
मुर्शिद के झूट की तो सजा बे-हिसाब है
तुम छोड़ियो न शहर को सहरा किए बगैर
उन आँगनों में कितना सुकून ओ सुरुर था
आराइश-ए-नजर तिरी परवा किए बगैर
याराँ खुशा ये रोज़ ओ शब-ए-दिल कि अब हमें
सब कुछ है खुश-गवार गवारा किए बगैर
गिर्या-कुनाँ की फर्द में अपना नहीं है नाम
हम गिर्या-कुन अजल के हैं गिर्या किए बगैर
आखिर हैं कौन लोग जो बरखो ही जाएँगे
तारीख के हराम से तौबा किए बगैर
वो सुन्नी बच्चा कौन था जिस की जफा ने 'जौन'
शीआ बना दिया हमें शीआ किए बगैर
अब तुम कभी न आओगे यानी कभी कभी
रुख्सत करो मुझे कोई वादा किए बगैर

हम तो जैसे वहाँ के थे ही नहीं
बे-अमाँ थे अमाँ के थे ही नहीं
हम कि हैं तेरी दास्ताँ यकसर
हम तिरी दास्ताँ के थे ही नहीं
उन को आँधी में ही बिखरना था
बाल ओ पर आशियाँ के थे ही नहीं
अब हमारा मकान किस का है
हम तो अपने मकाँ के थे ही नहीं
हो तिरी खाक-ए-आस्ताँ पे सलाम
हम तिरे आस्ताँ के थे ही नहीं
हम ने रंजिश में ये नहीं सोचा
कुछ सुखन तो जबाँ के थे ही नहीं
दिल ने डाला था दरमियाँ जिन को
लोग वो दरमियाँ के थे ही नहीं
उस गली ने ये सुन के सब्र किया
जाने वाले यहाँ के थे ही नहीं

इक जख्म भी यारान-ए-बिस्मिल नहीं आने का
मक्तल में पड़े रहिए क्रातिल नहीं आने का
अब कूच करो यारो सहरा से कि सुनते हैं
सहरा में अब आइंदा महमिल नहीं आने का
वाइज को खराबे में इक दावत-ए-हक दी थी
मैं जान रहा था वो जाहिल नहीं आने का
बुनियाद-ए-जहाँ पहले जो थी वही अब भी है
यूँ हश्र तो यारान-ए-यक-दिल नहीं आने का
बुत है कि खुदा है वो माना है न मानूँगा
उस शोख से जब तक मैं खुद मिल नहीं आने का
गर दिल की ये महफिल है खर्चा भी हो फिर दिल का
बाहर से तो सामान-ए-महफिल नहीं आने का
वो नाफ प्याले से सरमस्त करे वर्ना
हो के मैं कभी उस का काइल नहीं आने का

इक हुनर है जो कर गया हूँ मैं
सब के दिल से उतर गया हूँ मैं
कैसे अपनी हँसी को जब्त करूँ
सुन रहा हूँ कि धिर गया हूँ मैं
क्या बताऊँ कि मर नहीं पाता
जीते-जी जब से मर गया हूँ मैं
अब है बस अपना सामना दर-पेश
हर किसी से गुजर गया हूँ मैं
वही नाज-ओ-अदा वही गम्जे
सर-ब-सर आप पर गया हूँ मैं
अजब इल्जाम हूँ जमाने का
कि यहाँ सब के सर गया हूँ मैं
कभी खुद तक पहुँच नहीं पाया
जब कि वाँ उम्र भर गया हूँ मैं
तुम से जानौँ मिला हूँ जिस दिन से
बे-तरह खुद से डर गया हूँ मैं
कू-ए-जानौँ में सोग बरपा है
कि अचानक सुधर गया हूँ मैं

हर धड़कन हैजानी थी हर खामोशी तूफानी थी
फिर भी मोहब्बत सिफ़ मुसलसल मिलने की आसानी थी
जिस दिन उस से बात हुई थी उस दिन भी बे-कैफ़ था मैं
जिस दिन उस का खत आया है उस दिन भी वीरानी थी
जब उस ने मुझ से ये कहा था इश्क रिफाकत ही तो नहीं
तब मैं ने हर शख्स की सूरत मुश्किल से पहचानी थी
जिस दिन वो मिलने आई है उस दिन की रुदाद ये है
उस का बलाउज नारंजी था उस की सारी धानी थी
उलझन सी होने लगती थी मुझ को अक्सर और वो यूँ
मेरा मिजाज-ए-इश्क था शहरी उस की वफ़ा दहकानी थी
अब तो उस के बारे में तुम जो चाहो वो कह डालो
वो अंगड़ाई मेरे कमरे तक तो बड़ी रुहानी थी
नाम पे हम कुर्बान थे उस के लेकिन फिर ये तौर हुआ
उस को देख के रुक जाना भी सब से बड़ी कुर्बानी थी
मुझ से बिछड़ कर भी वो लड़की कितनी खुश खुश रहती है
उस लड़की ने मुझ से बिछड़ कर मर जाने की ठानी थी
इश्क की हालत कुछ भी नहीं थी बात बढ़ाने का फ़न था
लम्हे ला-फानी ठहरे थे क़तरों की तुर्यानी थी
जिस को खुद मैं ने भी अपनी रुह का इरफ़ाँ समझा था
वो तो शायद मेरे प्यासे होंटों की शैतानी थी
था दरबार-ए-कलाँ भी उस का नौबत-खाना उस का था
थी मेरे दिल की जो रानी अमरोहे की रानी थी

इक जख्म भी यारान-ए-बिस्मिल नहीं आने का मक्तल में पड़े रहिए क्रातिल नहीं आने का अब कूच करो यारो सहरा से कि सुनते हैं सहरा में अब आइंदा महमिल नहीं आने का वाइज को खराबे में इक दावत-ए-हक्क दी थी मैं जान रहा था वो जाहिल नहीं आने का बुनियाद-ए-जहाँ पहले जो थी वही अब भी है यूँ हश्र तो यारान-ए-यक-दिल नहीं आने का बुत है कि खुदा है वो माना है न मानूँगा उस शोख से जब तक मैं खुद मिल नहीं आने का गर दिल की ये महफिल है खर्चा भी हो फिर दिल का बाहर से तो सामान-ए-महफिल नहीं आने का वो नाफ प्याले से सरमस्त करे वर्णा हो के मैं कभी उस का क्राइल नहीं आने का

जाने कहाँ गया है वो वो जो अभी यहाँ था वो जो अभी यहाँ था वो कौन था कहाँ था ता-लम्हा-ए-गुजिश्ता ये जिस्म और साए जिंदा थे राएँगों में जो कुछ था राएँगों था अब जिस की दीद का है सौदा हमारे सर में वो अपनी ही नज़र में अपना ही इक समाँ था क्या क्या न खून थूका मैं उस गली में यारो सच जानना वहाँ तो जो फन था राएँगों था ये वार कर गया है पहलू से कौन मुझ पर था मैं ही दाएँ बाएँ और मैं ही दरमियाँ था उस शहर की हिफ़ाज़त करनी थी हम को जिस में आँधी की थीं फसीलें और गर्द का मकाँ था थी इक अजब फ़ज़ा सी इमकान-ए-खाल-ओ-खद की था इक अजब मुसविर और वो मिरा गुमाँ था उम्रे गुजर गई थी हम को यकीं से बिछड़े और लम्हा इक गुमाँ का सदियों में बे-अमाँ था जब ढूबता चला मैं तारीकियों की तह मैं तह मैं था इक दरीचा और उस मैं आसमाँ था

जाओ करार-ए-बे-दिलाँ शाम-ब-खैर शब-ब-खैर सेहन हुआ धुआँ धुआँ शाम-ब-खैर शब-ब-खैर शाम-ए-विसाल है क्रीब सुब्ह-ए-कमाल है क्रीब फिर न रहेंगे सरगिराँ शाम-ब-खैर शब-ब-खैर वज्द करेगी जिंदगी जिस्म-ब-जिस्म जॉ-ब-जॉ जिस्म-ब-जिस्म जॉ-ब-जॉ शाम-ब-खैर शब-ब-खैर ऐ मिरे शौक की उमंग मेरे शबाब की तरंग तुझ पे शफ़क का साएँबाँ शाम-ब-खैर शब-ब-खैर तू मिरी शायरी मैं है रंग-ए-तराज ओ गुल-फ़िशाँ तेरी बहार बे-खिज़ाँ शाम-ब-खैर शब-ब-खैर तेरा ख्याल ख्याब ख्याब खलवत-ए-जॉ की आब-ओ-ताब जिस्म-ए-जमील-ओ-नौजवाँ शाम-ब-खैर शब-ब-खैर है मिरा नाम-ए-अर्जुमंद तेरा हिसार-ए-सर-बुलंद बानो-ए-शहर-ए-जिस्म-ओ-जॉ शाम-ब-खैर शब-ब-खैर दीद से जान-ए-दीद तक दिल से रुख-ए-उमीद तक कोई नहीं है दरमियाँ शाम-ब-खैर शब-ब-खैर हो गई देर जाओ तुम मुझ को गले लगाओ तुम तू मिरी जॉ है मेरी जॉ शाम-ब-खैर शब-ब-खैर शाम-ब-खैर शब-ब-खैर मौज-ए-शमीम-ए-पैरहन तेरी महक रहेगी यॉ शाम-ब-खैर शब-ब-खैर

जो गुजर दुश्मन है उस का रहगुजर रक्खा है नाम जात से अपनी न हिलने का सफ़र रक्खा है नाम पड़ गया है इक भँवर उस को समझ बैठे हैं घर लहर उठी है लहर का दीवार-ओ-दर रक्खा है नाम नाम जिस का भी निकल जाए उसी पर है मदार उस का होना या न होना क्या, मगर रक्खा है नाम हम यहाँ खुद आए हैं लाया नहीं कोई हमें और खुदा का हम ने अपने नाम पर रक्खा है नाम चाक-ए-चाकी देख कर पैराहन-ए-पहनाई की मैं ने अपने हर नफ़स का बखिया-गर रक्खा है नाम मेरा सीना कोई छलनी भी अगर कर दे तो क्या मैं ने तो अब अपने सीने का सिपर रक्खा है नाम दिन हुए पर तू कहीं होना किसी भी शक़ू मैं जाग कर ख्याबों ने तेरा रात भर रक्खा है नाम

जी ही जी में वो जल रही होगी
 चाँदनी में टहल रही होगी
 चाँद ने तान ली है चादर-ए-अब्र
 अब वो कपड़े बदल रही होगी
 सो गई होगी वो शफ़क़-अंदाम
 सब्ज किंदील जल रही होगी
 सुर्ख और सब्ज वादियों की तरफ
 वो मिरे साथ चल रही होगी
 चढ़ते चढ़ते किसी पहाड़ी पर
 अब वो करवट बदल रही होगी
 पेड़ की छाल से रगड़ खा कर
 वो तने से फिसल रही होगी
 नील-गूँ झील नाफ तक पहने
 संदलीं जिस्म मल रही होगी
 हो के वो ख्वाब-ए-ऐश से बेदार
 कितनी ही देर शल रही होगी

जुज गुमाँ और था ही क्या मेरा
 फ़क़त इक मेरा नाम था मेरा
 निकहत-ए-पैरहन से उस गुल की
 सिलसिला बे-सबा रहा मेरा
 मुझ को ख्वाहिश ही ढूँडने की न थी
 मुझ में खोया रहा खुदा मेरा
 थूक दे खून जान ले वो अगर
 आलम-ए-तर्क-ए-मुद्दआ मेरा
 जब तुझे मेरी चाह थी जानाँ
 बस वही वक़त था कड़ा मेरा
 कोई मुझ तक पहुँच नहीं पाता
 इतना आसान है पता मेरा
 आ चुका पेश वो मुरब्बत से
 अब चलूँ काम हो चुका मेरा
 आज मैं खुद से हो गया मायूस
 आज इक यार मर गया मेरा

खूब है शौक का ये पहलू भी
मैं भी बर्बाद हो गया तू भी
हुस्न-ए-मङ्गमूम तमकनत में तिरी
फ़र्क आया न यक-सर-ए-मू भी
ये न सोचा था ज़ेर-ए-साया-ए-ज़ुल्फ़
कि बिछड़ जाएगी ये खुश-बू भी
हुस्न कहता था छेड़ने वाले
छेड़ना ही तो बस नहीं छू भी
हाए वो उस का मौज-खेज बदन
मैं तो प्यासा रहा लब-ए-जू भी
याद आते हैं मोजजे अपने
और उस के बदन का जादू भी
यासमीं उस की खास महरम-ए-राज़
याद आया करेगी अब तू भी
याद से उस की है मिरा परहेज़
ऐ सबा अब न आइयो तू भी
हैं यही 'जौन-एलिया' जो कभी
सख्त मगरुर भी थे बद-खू भी

ख्वाब की हालतों के साथ तेरी हिकायतों में हैं
हम भी दयार-ए-अहल-ए-दिल तेरी रिवायतों में हैं
वो जो थे रिश्ता-हा-ए-जाँ टूट सके भला कहाँ
जान वो रिश्ता-हा-ए-जाँ अब भी शिकायतों में हैं
एक गुबार है कि है दाएरा-वार पुर-फिशॉ
काफ़िला-हा-ए-कहकशाँ तंग हैं वहशतों में हैं
वक्त की दरमियानियाँ कर गई जाँ-कनी को जाँ
वो जो अदावतें कि थीं आज मोहब्बतों में हैं
परतव-ए-रंग है कि है दीद में जाँ-नशीन-ए-रंग
रंग कहाँ हैं रु-नुमा रंग तो निकहतों में हैं
है ये वजूद की नुमूद अपनी नफ़स नफ़स गुरेज़
वक्त की सारी बस्तियाँ अपनी हज़ीमतों में हैं
गर्द का सारा खानमाँ है सर-ए-दश्त-ए-बे-अमाँ
शहर हैं वो जो हर तरह गर्द की खिदमतों में हैं
वो दिल ओ जान सूरतें जैसे कभी न थीं कही
हम उन्हीं सूरतों के हैं हम उन्हीं सूरतों में हैं
मैं न सुनूँगा माजरा मारका-हा-ए-शौक का
खून गए हैं राएगाँ रंग नदामतों में हैं

किस से इजहार-ए-मुझ्मा कीजे
आप मिलते नहीं हैं क्या कीजे
हो न पाया ये फैसला अब तक
आप कीजे तो क्या किया कीजिए
आप थे जिस के चारागर वो जवाँ
सख्त बीमार है दुआ कीजे
एक ही फ़न तो हम ने सीखा है
जिस से मिलिए उसे खफा कीजे
है तकाजा मिरी तबीअत का
हर किसी को चराग़-पा कीजे
है तो बारे ये आलम-ए-असबाब
बे-सबब चीखने लगा कीजे

आज हम क्या गिला करें उस से
गिला-ए-तंगी-ए-कबा कीजे
नुत्कृ हैवान पर गिराँ है अभी
गुफ्तुगू कम से कम किया कीजे
हजरत-ए-ज़ुल्फ़-ए-ग़ालिया-अफ़शाँ
नाम अपना सबा सबा कीजे
जिंदगी का अजब मुआमला है
एक लम्हे में फैसला कीजे
मुझ को आदत है रुठ जाने की
आप मुझ को मना लिया कीजे
मिलते रहिए इसी तपाक के साथ
बेवफ़ाई की इंतिहा कीजे
कोहकन को है खुद-कुशी ख्वाहिश
शाह-बानो से इल्तिजा कीजे
मुझ से कहती थीं वो शराब आँखें
आप वो जहर मत पिया कीजे
रंग हर रंग में है दाद-तलब
खून थूकूँ तो वाह-वा कीजे

कितने ऐश से रहते होंगे कितने इतराते होंगे
जाने कैसे लोग वो होंगे जो उस को भाते होंगे
शाम हुए खुश-बाश यहाँ के मेरे पास आ जाते हैं
मेरे बुझने का नज्जारा करने आ जाते होंगे
वो जो न आने वाला है ना उस से मुझ को मतलब था
आने वालों से क्या मतलब आते हैं आते होंगे
उस की याद की बाद-ए-सबा में और तो क्या होता होगा
यूँही मेरे बाल हैं बिखरे और बिखर जाते होंगे
यारो कुछ तो जिक्र करो तुम उस की क़्रायामत बाँहों का
वो जो सिमटते होंगे उन में वो तो मर जाते होंगे
मेरा साँस उखड़ते ही सब बैन करेंगे रोएँगे
यानी मेरे बाद भी यानी साँस लिए जाते होंगे

कोई दम भी मैं कब अंदर रहा हूँ
लिए हैं साँस और बाहर रहा हूँ
धूएँ में साँस हैं साँसों में पल हैं
मैं रौशन-दान तक बस मर रहा हूँ
फना हर दम मुझे गिनती रही है
मैं इक दम का था और दिन भर रहा हूँ
जरा इक साँस रोका तो लगा यूँ
कि इतनी देर अपने घर रहा हूँ
ब-जुज अपने मयस्सर है मुझे क्या
सो खुद से अपनी जेबें भर रहा हूँ
हमेशा ज़ख्म पहुँचे हैं मुझी को
हमेशा मैं पस-ए-लश्कर रहा हूँ
लिटा दे नींद के बिस्तर पे ऐ रात
मैं दिन भर अपनी पलकों पर रहा हूँ

क्या हो गया है गेसू-ए-खमदार को तिरे
आजाद कर रहे हैं गिरफ्तार को तिरे
अब तू है मुहतों से शब-ओ-रोज रु-ब-रु
कितने ही दिन गुजर गए दीदार को तिरे
कल रात चोबदार समेत आ के ले गया
इक गोल-ए-तरह-दार सर-ए-दार को तिरे
अब इतनी कुंद हो गई धार ऐ यकीं तिरी
अब रोकता नहीं है कोई वार को तिरे
अब रिश्ता-ए-मरीज़-ओ-मसीहा हुआ है ख्वार
सब पेशा-वर समझते हैं बीमार को तिरे
बाहर निकल के आ दर-ओ-दीवार-ए-जात से
ले जाएगी हवा दर ओ दीवार को तिरे
ऐ रंग उस में सूद है तेरा जियाँ नहीं
खुशबू उड़ा के ले गई ज़ंगार को तिरे

क्या कहें तुम से बूद-ओ-बाश अपनी
काम ही क्या वही तलाश अपनी
कोई दम ऐसी जिंदगी भी करें
अपना सीना हो और खराश अपनी
अपने ही तेशा-ए-नदामत से
जात है अब तो पाश पाश अपनी
है लबों पर नफस-ज़नी की दुकाँ
यावा-गोई है बस मआश अपनी
तेरी सूरत पे हूँ निसार प अब
और सूरत कोई तराश अपनी
जिस्म ओ जाँ को तो बेच ही डाला
अब मुझे बेचनी है लाश अपनी

लाजिम है अपने आप की इमदाद कुछ करूँ
सीने में वो खला है कि ईजाद कुछ करूँ
हर लम्हा अपने आप में पाता हूँ कुछ कमी
हर लम्हा अपने आप में ईजाद कुछ करूँ
रु-कार से तो अपनी मैं लगता हूँ पाएदार
बुनियाद रह गई प-ए-बुनियाद कुछ करूँ
तारी हुआ है लम्हा-ए-मौजूद इस तरह
कुछ भी न याद आए अगर याद कुछ करूँ
मौसम का मुझ से कोई तकाज़ा है दम-ब-दम
बे-सिलसिला नहीं नफस-ए-बाद कुछ करूँ

लम्हे लम्हे की ना-रसाई है
जिंदगी हालत-ए-जुदाई है
मर्द-ए-मैदाँ हूँ अपनी जात का मैं
मैं ने सब से शिकस्त खाई है
इक अजब हाल है कि अब उस को
याद करना भी बेवफाई है
अब ये सूरत है जान-ए-जाँ कि तुझे
भूलने में मिरी भलाई है
खुद को भोला हूँ उस को भूला हूँ
उम्र भर की यही कमाई है
मैं हुनर-मंद-ए-रंग हूँ मैं ने
खून थूका है दाद पाई है
जाने ये तेरे वस्ल के हंगाम
तेरी फुर्कत कहाँ से आई है

मसनद-ए-गम पे जच रहा हूँ मैं
अपना सीना खुरच रहा हूँ मैं
ऐ सगान-ए-गुरसना-ए-अय्याम
जूँ गिज्जा तुम को पच रहा हूँ मैं
अन्दरून-ए-हिसार-ए-खामोशी
शेर की तरह मच रहा हूँ मैं
वक्त का खून-ए-राएगाँ हूँ मगर
खुशक लम्हों में रच रहा हूँ मैं
खून में तर-ब-तर रहा मिरा नाम
हर जमाने का सच रहा हूँ मैं
हाल ये है कि अपनी हालत पर
गौर करने से बच रहा हूँ मैं

मुझे गरज है मिरी जान गुल मचाने से
न तेरे आने से मतलब न तेरे जाने से
अजीब है मिरी फितरत कि आज ही मसलन
मुझे सुकून मिला है तिरे न आने से
इक इज्जिहाद का पहलू ज़रूर है तुझ में
खुशी हुई तिरे ना-वक्त मुस्कुराने से
ये मेरा जोश-ए-मोहब्बत फ़क़त इबारत है
तुम्हारी चम्पई रानों को नोच खाने से
मोहज्जब आदमी पतलून के बटन तो लगा
कि इर्तिका है इबारत बटन लगाने से

न पूछ उस की जो अपने अंदर छुपा
गनीमत कि मैं अपने बाहर छुपा
मुझे याँ किसी पे भरोसा नहीं
मैं अपनी निगाहों से छुप कर छुपा
पहुँच मुखबिरों की सुखन तक कहाँ
सो मैं अपने होटों पे अक्सर छुपा
मिरी सुन न रख अपने पहलू में दिल
इसे तू किसी और के घर छुपा
यहाँ तेरे अंदर नहीं मेरी ख़ैर
मिरी जाँ मुझे मेरे अंदर छुपा
ख़यालों की आमद में ये खारज़ार
है तीरों की यलगार तू सर छुपा

नया इक रब्त पैदा क्यूँ करें हम
बिछड़ना है तो झगड़ा क्यूँ करें हम
खमोशी से अदा हो रस्म-ए-दूरी
कोई हंगामा बरपा क्यूँ करें हम
ये काफ़ी है कि हम दुश्मन नहीं हैं
वफ़ादारी का दावा क्यूँ करें हम
वफ़ा इख्लास कुर्बानी मोहब्बत
अब इन लफजों का पीछा क्यूँ करें हम
हमारी ही तमन्ना क्यूँ करो तुम
तुम्हारी ही तमन्ना क्यूँ करें हम
किया था अहद जब लम्हों में हम ने
तो सारी उम्र ईफ़ा क्यूँ करें हम
नहीं दुनिया को जब परवाह हमारी
तो फिर दुनिया की परवाह क्यूँ करें हम
ये बस्ती है मुसलामानों की बस्ती
यहाँ कार-ए-मसीहा क्यूँ करें हम

रंज है हालत-ए-सफर हाल-ए-क्याम रंज है सुब्ह-ब-सुब्ह रंज है शाम-ब-शाम रंज है उस की शमीम-ए-ज़ुल्फ़ का कैसे हो शुक्रिया अदा जब कि शमीम रंज है जब कि मशाम रंज है सैद तो क्या कि सैद-कार खुद भी नहीं ये जानता दाना भी रंज है यहाँ यानी कि दाम रंज है मानी-ए-जावेदान-ए-जाँ कुछ भी नहीं मगर ज़ियाँ सारे कलीम हैं जुबूँ सारा कलाम रंज है बाबा अलिफ़ मिरी नुमूद रंज है आप के ब-क़ौल क्या मिरा नाम भी है रंज हॉ तिरा नाम रंज है कासा गदागरी का है नाफ़ प्याला यार का भूक है वो बदन तमाम वस्ल तमाम रंज है जीत के कोई आए तब हार के कोई आए तब जौहर-ए-तेग़ शर्म है और नियाम रंज है दिल ने पढ़ा सबक तमाम बूद तो है क़लक तमाम हाँ मिरा नाम रंज है हाँ तिरा नाम रंज है पैक-ए-क़ज़ा है दम-ब-दम 'जौन' क़दम क़दम शुमार लिज़िश-ए-गाम रंज है हुस्न-ए-खिराम रंज है बाबा अलिफ़ ने शब कहा नशशा-ब-नशशा कर गिले जुरआ-ब-जुरआ रंज है जाम-ब-जाम रंज है आन पे हो मदार क्या बूद के रोज़गार का दम हमा-दम है दूँ ये दम वहम-ए-दवाम रंज है रज्म है खून का हज़र कोई बहाए या बहे रुस्तम ओ ज़ाल हैं मलाल यानी कि साम रंज है

रुह प्यासी कहाँ से आती है ये उदासी कहाँ से आती है है वो यक-सर सुपुर्दगी तो भला बद-हवासी कहाँ से आती है वो हम-आगेश है तो फिर दिल में ना-शनासी कहाँ से आती है एक जिंदान-ए-बे-दिली और शाम ये सबा सी कहाँ से आती है तू है पहलू में फिर तिरी खुशबू हो के बासी कहाँ से आती है दिल है शब-सोख्ता सिवाए उम्मीद तू निदा सी कहाँ से आती है मैं हूँ तुझ में और आस हूँ तेरी तो निरासी कहाँ से आती है

सारे रिश्ते तबाह कर आया दिल-ए-बर्बाद अपने घर आया आखिरश खून थूकने से मियाँ बात में तेरी क्या असर आया था खबर में ज़ियाँ दिल ओ जाँ का हर तरफ से मैं बे-खबर आया अब यहाँ होश में कभी अपने नहीं आऊँगा मैं अगर आया मैं रहा उम्र भर जुदा खुद से याद मैं खुद को उम्र भर आया वो जो दिल नाम का था एक नफर आज मैं इस से भी मुकर आया मुद्दतों ब'अद घर गया था मैं जाते ही मैं वहाँ से डर आया

सर ही अब फोड़िए निदामत में
नींद आने लगी है फुर्क्त में
हैं दलीलें तिरे खिलाफ़ मगर
सोचता हूँ तिरी हिमायत में
रुह ने इश्क का फरेब दिया
जिस्म को जिस्म की अदावत में
अब फक्त आदतों की वर्जिश है
रुह शामिल नहीं शिकायत में
इश्क को दरमियाँ न लाओ कि मैं
चीखता हूँ बदन की उसरत में
ये कुछ आसान तो नहीं है कि हम
रुठते अब भी हैं मुरव्वत में
वो जो तामीर होने वाली थी
लग गई आग उस इमारत में
जिंदगी किस तरह बसर होगी
दिल नहीं लग रहा मोहब्बत में
हासिल-ए-कुन है ये जहान-ए-खराब
यही मुमकिन था इतनी उजलत में
फिर बनाया खुदा ने आदम को
अपनी सूरत पे ऐसी सूरत में
और फिर आदमी ने गौर किया
छिपकली की लतीफ सनअत में
ऐ खुदा जो कहीं नहीं मौजूद
क्या लिखा है हमारी किस्मत में

शमशीर मेरी, मेरी सिपर किस के पास है
दो मेरा खूद पर मिरा सर किस के पास है
दरपेश एक काम है हिम्मत का साथियो
कसना है मुझ को मेरी कमर किस के पास है
तारी हो मुझ पे कौन सी हालत मुझे बताओ
मेरा हिसाब-ए-नफ़-ओ-जरर किस के पास है
ऐ अहल-ए-शहर में तो दुआ-गो-ए-शहर हूँ
लब पर मिरे दुआ है असर किस के पास है
दाद-ओ-सितद के शहर में होने को आई शाम
ख्वाहिश है मेरे पास खबर किस के पास है
पुर-हाल हूँ प सूरत-ए-अहवाल कुछ नहीं
हैरत है मेरे पास नजर किस के पास है
इक आफ्ताब है मिरी जेब-ए-निगाह में
पहनाई-ए-नुमूद-ए-सहर किस के पास है
किस्सा किशोर का नहीं कोशक का है कि है
दरवाजा सब के पास है घर किस के पास है
मेहमान-ए-क़स्त हैं हमें कुछ रम्ज चाहिएँ
ये पूछ के बताओ खंडर किस के पास है
उथला सा नाफ़-प्याला हमारी नहीं तलाश
ऐ लड़कियो! बताओ भँवर किस के पास है
नाखुन बढ़े हुए हैं मिरे मुझ से कर हज़र
ये जा के देख नेल-कटर किस के पास है

शाम हुई है यार आए हैं यारों के हमराह चलें
आज वहाँ कब्बाली होगी 'जॉन' चलो दरगाह चलें
अपनी गलियाँ अपने रमने अपने जंगल अपनी हवा
चलते चलते वज्द में आएँ राहों में बे-राह चलें
जाने बस्ती में जंगल हो या जंगल में बस्ती हो
है कैसी कुछ ना-आगाही आओ चलो नागाह चलें
कूच अपना उस शहर तरफ है नामी हम जिस शहर के हैं
कपड़े फाड़े खाक-ब-सर हों और ब-इज्ज-ओ-जाह चलें
राह में उस की चलना है तो ऐश करा दें क़दमों को
चलते जाएँ चलते जाएँ यानी खातिर ख्वाह चलें

शर्मिंदगी है हम को बहुत हम मिले तुम्हें
तुम सर-ब-सर खुशी थे मगर गम मिले तुम्हें
मैं अपने आप मैं न मिला इस का गम नहीं
गम तो ये है कि तुम भी बहुत कम मिले तुम्हें
है जो हमारा एक हिसाब उस हिसाब से
आती है हम को शर्म कि पैहम मिले तुम्हें
तुम को जहान-ए-शौक़-ओ-तमना में क्या मिला
हम भी मिले तो दरहम ओ बरहम मिले तुम्हें
अब अपने तौर ही मैं नहीं तुम सो काश कि
खुद में खुद अपना तौर कोई दम मिले तुम्हें
इस शहर-ए-हीला-जू में जो महरम मिले मुझे
फ्रियाद जान-ए-जॉ वही महरम मिले तुम्हें
देता हूँ तुम को खुश्की-ए-मिजाँ की मैं दुआ
मतलब ये है कि दामन-ए-पुर-नम मिले तुम्हें
मैं उन मैं आज तक कभी पाया नहीं गया
जानाँ जो मेरे शौक़ के आलम मिले तुम्हें
तुम ने हमारे दिल में बहुत दिन सफर किया
शर्मिंदा हैं कि उस मैं बहुत खम मिले तुम्हें
यूँ हो कि और ही कोई हवा मिले मुझे
हो यूँ कि और ही कोई आदम मिले तुम्हें

शौक़ का रंग बुझ गया याद के ज़ख्म भर गए
क्या मिरी फ़स्ल हो चुकी क्या मिरे दिन गुजर गए
रह-गुजर-ए-खयाल में दोश-ब-दोश थे जो लोग
वक्त की गर्द-बाद मैं जाने कहाँ बिखर गए
शाम है कितनी बे-तपाक शहर है कितना सहम-नाक
हम-नफसो! कहाँ हो तुम जाने ये सब किधर गए!
पास-ए-हयात का खयाल हम को बहुत बुरा लगा
पस ब-हुजूम-ए-मअरका जान के बे-सिपर गए
मैं तो सफ़ों के दरमियाँ कब से पड़ा हूँ नीम-जॉ
मेरे तमाम जॉ-निसार मेरे लिए तो मर गए

सीना दहक रहा हो तो क्या चुप रहे कोई
क्यूँ चीख चीख कर न गला छील ले कोई
साबित हुआ सुकून-ए-दिल-ओ-जॉ कहीं नहीं
रिश्तों मैं ढूँढ़ता है तो ढूँड़ा करे कोई
तर्क-ए-तअल्लुकात कोई मसला नहीं
ये तो वो रास्ता है कि बस चल पड़े कोई
दीवार जानता था जिसे मैं वो धूल थी
अब मुझ को ए'तिमाद की दावत न दे कोई
मैं खुद ये चाहता हूँ कि हालात हूँ खराब
मेरे खिलाफ़ जहर उगलता फिरे कोई
ऐ शख्स अब तो मुझ को सभी कुछ कुबूल है
ये भी कुबूल है कि तुझे छीन ले कोई
हाँ ठीक है मैं अपनी अना का मरीज हूँ
आखिर मिरे मिजाज मैं क्यूँ दरख्ल दे कोई
इक शख्स कर रहा है अभी तक वफ़ा का ज़िक्र
काश उस ज़बाँ-दराज का मुँह नोच ले कोई

सिलसिला जुम्बा इक तन्हा से रुह किसी तन्हा की थी
एक आवाज अभी आई थी वो आवाज हवा की थी
बे-दुनियाई ने इस दिल की और भी दुनिया-दार किया
दिल पर ऐसी टूटी दुनिया तर्क जरा दुनिया की थी
अपने अंदर हँसता हूँ मैं और बहुत शरमाता हूँ
खून भी थूका सच-मुच थूका और ये सब चालाकी थी
अपने-आप से जब मैं गया हूँ तब की रिवायत सुनता हूँ
आ कर कितने दिन तक उस की याद मुझे पूछा की थी
हूँ सौदाई सौदाई सा जब से मैं ने जाना है
तय वो राह-ए-सर-ए-सौदाई मैं ने बे-सौदा की थी
गर्द थी बेगाना-गर्दी की जो थी निगह मेरी ताहम
जब भी कोई सूरत बिछड़ी आँखों मैं नम-नाकी थी
है ये किस्सा कितना अच्छा पर मैं अच्छा समझूँ तो
एक था कोई जिस ने यक-दम ये दुनिया पैदा की थी

सोचा है कि अब कार-ए-मसीहा न करेंगे
वो खून भी थूकेगा तो परवा न करेंगे
इस बार वो तल्खी है कि रुठे भी नहीं हम
अब के वो लड़ाई है कि झगड़ा न करेंगे
याँ उस के सलीके के ही आसार तो क्या हम
इस पर भी ये कमरा तह-ओ-बाला न करेंगे
अब नग्मा-तराजान-ए-बर-अफरोख्ता ऐ शहर
वासोख्त कहेंगे गजल इंशा न करेंगे
ऐसा है कि सीने में सुलगती हैं खराशें
अब साँस भी हम लेंगे तो अच्छा न करेंगे

ठीक है खुद को हम बदलते हैं
शुक्रिया मश्वरत का चलते हैं
हो रहा हूँ मैं किस तरह बर्बाद
देखने वाले हाथ मलते हैं
है वो जान अब हर एक महफिल की
हम भी अब घर से कम निकलते हैं
क्या तकल्पुफ करें ये कहने में
जो भी खुश है हम उस से जलते हैं
है उसे दूर का सफर दर-पेश
हम सँभाले नहीं सँभलते हैं
तुम बनो रंग तुम बनो खुशबू
हम तो अपने सुखन में ढलते हैं
मैं उसी तरह तो बहलता हूँ
और सब जिस तरह बहलते हैं
है अजब फैसले का सहरा भी
चल न पड़िए तो पाँव जलते हैं

तो भी चुप है मैं भी चुप हूँ ये कैसी तन्हाई है
तेरे साथ तिरी याद आई क्या तू सच-मुच आई है
शायद वो दिन पहला दिन था पलकें बोझल होने का
मुझ को देखते ही जब उस की अंगड़ाई शर्माई है
इस दिन पहली बार हुआ था मुझ को रिफाकत का एहसास
जब उस के मल्बूस की खुशबू घर पहुँचाने आई है
हुस्त से अर्ज-ए-शौक न करना हुस्त को जक पहुँचाना है
हम ने अर्ज-ए-शौक न कर के हुस्त को जक पहुँचाई है
हम को और तो कुछ नहीं सूझा अलबत्ता उस के दिल में
सोज-ए-रकाबत पैदा कर के उस की नींद उड़ाई है
हम दोनों मिल कर भी दिलों की तन्हाई में भटकेंगे
पागल कुछ तो सोच ये तू ने कैसी शक्ति बनाई है
इशक-ए-पैचाँ की संदल पर जाने किस दिन बेल चढ़े
क्यारी में पानी ठहरा है दीवारों पर काई है
हुस्त के जाने कितने चेहरे हुस्त के जाने कितने नाम
इशक का पेशा हुस्त-परस्ती इशक बड़ा हरजाई है
आज बहुत दिन ब'अद में अपने कमरे तक आ निकला था
जों ही दरवाजा खोला है उस की खुशबू आई है
एक तो इतना हब्स है फिर मैं साँसें रोके बैठा हूँ
वीरानी ने झाड़ू दे के घर में धूल उड़ाई है

तंग आगोश में आबाद करूँगा तुझ को
हूँ बहुत शाद कि नाशाद करूँगा तुझ को
फिक्र-ए-ईजाद में गुम हूँ मुझे गाफिल न समझ
अपने अंदाज पर ईजाद करूँगा तुझ को
नश्शा है राह की दूरी का कि हमराह है तू
जाने किस शहर में आबाद करूँगा तुझ को
मेरी बाँहों में बहकने की सज्जा भी सुन ले
अब बहुत देर में आजाद करूँगा तुझ को
मैं कि रहता हूँ ब-सद-नाज गुरेजाँ तुझ से
तू न होगा तो बहुत याद करूँगा तुझ को

तुझ में पड़ा हुआ हूँ हरकत नहीं है मुझ में
हालत न पूछियो तू हालत नहीं है मुझ में
अब तो नजर में आ जा बाँहों के घर में आ जा
ऐ जान तेरी कोई सूरत नहीं है मुझ में
ऐ रंग रंग में आ आगोश-ए-तंग में आ
बातें ही रंग की हैं रंगत नहीं है मुझ में
अपने में ही किसी की हो रु-ब-रुई मुझ को
हूँ खुद से रु-ब-रु मैं हिम्मत नहीं है मुझ में
अब तो सिमट के आ जा और रुह में समा जा
वैसे किसी की प्यारे वुसअत नहीं है मुझ में
शीशे के इस तरफ से मैं सब को तक रहा हूँ
मरने की भी किसी को फुर्सत नहीं है मुझ में
तुम मुझ को अपने रम में ले जाओ साथ अपने
अपने से ऐ ग़ज़ालो वहशत नहीं है मुझ में

तुझ से गिले करूँ तुझे जानाँ मनाऊँ मैं
इक बार अपने-आप में आऊँ तो आऊँ मैं
दिल से सितम की बे-सर-ओ-कारी हवा को है
वो गर्द उड़ रही है कि खुद को ग़वाऊँ मैं
वो नाम हूँ कि जिस पे नदामत भी अब नहीं
वो काम हैं कि अपनी जुदाई कमाऊँ मैं
क्यूँकर हो अपने ख़बाब की आँखों में वापसी
किस तौर अपने दिल के ज़मानों में जाऊँ मैं
इक रंग सी कमान हो खुशबू सा एक तीर
मरहम सी वारदात हो और ज़ख्म खाऊँ मैं
शिकवा सा इक दरीचा हो नश्शा सा इक सुकूत
हो शाम इक शराब सी और लड़खड़ाऊँ मैं
फिर उस गली से अपना गुजर चाहता है दिल
अब उस गली को कौन सी बस्ती से लाऊँ मैं

तुम्हारा हिज्र मना लूँ अगर इजाजत हो
मैं दिल किसी से लगा लूँ अगर इजाजत हो
तुम्हारे ब'अद भला क्या हैं ब'अदा-ओ-पैमाँ
बस अपना वक्त ग़वा लूँ अगर इजाजत हो
तुम्हारे हिज्र की शब-हा-ए-कार में जानाँ
कोई चराग़ जला लूँ अगर इजाजत हो
जुनूँ वही है वही मैं मगर है शहर नया
यहाँ भी शोर मचा लूँ अगर इजाजत हो
किसे है ख्वाहिश-ए-मरहम-गरी मगर फिर भी
मैं अपने ज़ख्म दिखा लूँ अगर इजाजत हो
तुम्हारी याद में जीने की आरज़ू है अभी
कुछ अपना हाल स़मालूँ अगर इजाजत हो

यादों का हिसाब रख रहा हूँ
सीने में अज़ाब रख रहा हूँ
तुम कुछ कहे जाओ क्या कहूँ मैं
बस दिल में जवाब रख रहा हूँ
दामन में किए हैं जमा गिर्दाब
जेबों में हबाब रख रहा हूँ
आएगा वो नखवती सो मैं भी
कमरे को खराब रख रहा हूँ
तुम पर मैं सहीफा-हा-ए-कोहना
इक ताज़ा किताब रख रहा हूँ

उम्र गुजरेगी इस्तिहान में क्या
दाग ही देंगे मुझ को दान में क्या
मेरी हर बात बे-असर ही रही
नक्स है कुछ मिरे बयान में क्या
मुझ को तो कोई टोकता भी नहीं
यही होता है खानदान में क्या
अपनी महरूमियाँ छुपाते हैं
हम गरीबों की आन-बान में क्या
खुद को जाना जुदा ज़माने से
आ गया था मिरे गुमान में क्या
शाम ही से दुकान-ए-दीद है बंद
नहीं नुकसान तक दुकान में क्या
ऐ मिरे सुब्ह-ओ-शाम-ए-दिल की शफ़क़
तू नहाती है अब भी बान में क्या
बोलते क्यूँ नहीं मिरे हक में
आबले पड़ गए जबान में क्या
खामुशी कह रही है कान में क्या
आ रहा है मिरे गुमान में क्या
दिल कि आते हैं जिस को ध्यान बहुत
खुद भी आता है अपने ध्यान में क्या
वो मिले तो ये पूछना है मुझे
अब भी हूँ मैं तिरी अमान में क्या
यूँ जो तकता है आसमान को तू
कोई रहता है आसमान में क्या
है नसीम-ए-बहार गर्द-आलूद
खाक उड़ती है उस मकान में क्या
ये मुझे चैन क्यूँ नहीं पड़ता
एक ही शख्स था जहान में क्या

ये जो सुना इक दिन वो हवेली यकसर बे-आसार गिरी
हम जब भी साए में बैठे दिल पर इक दीवार गिरी
ज़ँही मुड़ कर देखा मैं ने बीच उठी थी इक दीवार
बस यूँ समझो मेरे ऊपर बिजली सी इक बार गिरी
धार पे बाड़ रखी जाए और हम उस के घायल ठहरें
मैं ने देखा और नजरों से उन पलकों की धार गिरी
गिरने वाली उन तअमीरों में भी एक सलीका था
तुम ईटों की पूछ रहे हो मिट्टी तक हमवार गिरी
बेदारी के बिस्तर पर मैं उन के ख्वाब सजाता हूँ
नीद भी जिन की टाट के ऊपर ख्वाबों से नादार गिरी
खूब ही थी वो क्रौम-ए-शहीदाँ यानी सब बे-जखम-ओ-खराश
मैं भी उस सफ़ में था शामिल वो सफ़ जो बे-वार गिरी
हर लम्हा घमसान का रन है कौन अपने औसान में है
कौन है ये? अच्छा तो मैं हूँ लाश तो हॉ इक यार गिरी

जिंदगी क्या है इक कहानी है
ये कहानी नहीं सुनानी है
है खुदा भी अजीब यानी जो
न ज़मीनी न आसमानी है
है मिरे शौक-ए-वस्ल को ये गिला
उस का पहलू सरा-ए-फ़ानी है
अपनी तामीर-ए-जान-ओ-दिल के लिए
अपनी बुनियाद हम को ढानी है
ये है लम्हों का एक शहर-ए-अजल
याँ की हर बात ना-गहानी है
चलिए ऐ जान-ए-शाम आज तुम्हें
शम्अ इक कब्र पर जलानी है
रंग की अपनी बात है वर्ना
आखिरश खून भी तो पानी है
इक अबस का वजूद है जिस से
जिंदगी को मुराद पानी है
शाम है और सेहन में दिल के
इक अजब हुजन-ए-आसमानी है

जब्त कर के हँसी को भूल गया
 मैं तो उस जरूर ही को भूल गया
 जात दर जात हम-सफर रह कर
 अजनबी अजनबी को भूल गया
 सुह तक वज्ह-ए-जॉ-कनी थी जो बात
 मैं उसे शाम ही को भूल गया
 अहद-ए-वाबस्तगी गुजार के मैं
 वज्ह-ए-वाबस्तगी को भूल गया
 सब दलीलें तो मुझ को याद रही
 बहस क्या थी उसी को भूल गया
 क्यूँ न हो नाज इस ज़ेहानत पर
 एक मैं हर किसी को भूल गया
 सब से पुर-अम्र वाकिआ ये है
 आदमी आदमी को भूल गया
 कहकहा मारते ही दीवाना
 हर ग़म-ए-जिंदगी को भूल गया
 ख्वाब-हा-ख्वाब जिस को चाहा था
 रंग-हा-रंग उसी को भूल गया
 क्या क्रयामत हुई अगर इक शरक्स
 अपनी खुश-किसमती को भूल गया
 सोच कर उस की खल्वत-अंजुमनी
 वाँ मैं अपनी कमी को भूल गया
 सब बुरे मुझ को याद रहते हैं
 जो भला था उसी को भूल गया
 उन से व'अदा तो कर लिया लेकिन
 अपनी कम-फुर्सती को भूल गया
 बस्तियो अब तो रास्ता दे दो
 अब तो मैं उस गली को भूल गया
 उस ने गोया मुझी को याद रखा
 मैं भी गोया उसी को भूल गया
 यानी तुम वो हो वाकई? हद है
 मैं तो सच-मुच सभी को भूल गया
 आखिरी बुत खुदा न क्यूँ ठहरे
 बुत-शिकन बुत-गरी को भूल गया
 अब तो हर बात याद रहती है
 ग़ालिबन मैं किसी को भूल गया
 उस की खुशियों से जलने वाला 'जौन'
 अपनी ईजा-दही को भूल गया

शेर

यूँ जो तकता है आसमान को तू
कोई रहता है आसमान में क्या
ये मुझे चैन क्यूँ नहीं पड़ता
एक ही शख्स था जहान में क्या
ये काफी है कि हम दुश्मन नहीं हैं
वफा-दारी का दावा क्यूँ करें हम
उस के होटों पे रख के होट अपने
बात ही हम तमाम कर रहे हैं
उस गली ने ये सुन के सब्र किया
जाने वाले यहाँ के थे ही नहीं
तेग-बाजी का शौक अपनी जगह
आप तो क़त्ल-ए-आम कर रहे हैं
सब से पुर-अम्र वाकिआ ये है
आदमी आदमी को भूल गया
नया इक रब्त पैदा क्यूँ करें हम
बिछड़ना है तो झगड़ा क्यूँ करें हम
मुझ को तो कोई टोकता भी नहीं
यही होता है खानदान में क्या
खूब है शौक का ये पहलू भी
मैं भी बर्बाद हो गया तू भी
खूब है इश्क का ये पहलू भी
मैं भी बर्बाद हो गया तू भी

खमोशी से अदा हो रस्म-ए-दूरी
कोई हंगामा बरपा क्यूँ करें हम
कौन इस घर की देख-भाल करे
रोज इक चीज ढूट जाती है
जो गुजारी न जा सकी हम से
हम ने वो ज़िंदगी गुजारी है
हुस्त कहता था छेड़ने वाले
छेड़ना ही तो बस नहीं छू भी
हम हैं मसरूफ-ए-इंतिज़ाम मगर
जाने क्या इंतिज़ाम कर रहे हैं
दाद-ओ-तहसीन का ये शेर है क्यूँ
हम तो खुद से कलाम कर रहे हैं
और क्या चाहती है गर्दिश-ए-अच्याम कि हम
अपना घर भूल गए उन की गली भूल गए
मैं भी बहुत अजीब हूँ इतना अजीब हूँ कि बस
खुद को तबाह कर लिया और मलाल भी नहीं
कैसे कहें कि उस को भी हम से है कोई वास्ता
उस ने तो हम से आज तक कोई गिला नहीं किया
यारो कुछ तो जिक्र करो तुम उस की क्रयामत बाँहों का
वो जो सिमटते होंगे उन में वो तो मर जाते होंगे

नज़म

दरीचा-हा-ए-ख्याल

चाहता हूँ कि भूल जाऊँ तुम्हें
और ये सब दरीचा-हा-ए-ख्याल
जो तुम्हारी ही सम्त खुलते हैं
बंद कर दूँ कुछ इस तरह कि यहाँ
याद की इक किरन भी आ न सके

चाहता हूँ कि भूल जाऊँ तुम्हें
और खुद भी न याद आऊँ तुम्हें
जैसे तुम सिर्फ़ इक कहानी थी
जैसे मैं सिर्फ़ इक फ़साना था

ख़्ल्वत

मुझे तुम अपनी बाँहों में जकड़ लो और मैं तुम को
किसी भी दिल-कुशा जज्बे से यकसर ना-शनासाना
नशात-ए-रंग की सरशारी-ए-हालत से बेगाना
मुझे तुम अपनी बाँहों में जकड़ लो और मैं तुम को
फुसूँ-कारा निगारा नौ-बहारा आरजू-आरा
भला लम्हों का मेरी और तुम्हारी ख्याब-परवर
आरजू-मंदी की सरशारी से क्या रिश्ता
हमारी बाहमी यादों की दिलदारी से क्या रिश्ता
मुझे तुम अपनी बाँहों में जकड़ लो और मैं तुम को
यहाँ अब तीसरा कोई नहीं यानी मोहब्बत भी

फ़न पारा

ये किताबों की सफ-ब-सफ जिल्दें
कागजों का फुजूल इस्तिमाल
रौशनाई का शानदार इसराफ
सीधे सीधे से कुछ सियह धब्बे
जिन की तौजीह आज तक न हुई
चंद खुश-जौक कम-नसीबों ने
बसर औक्रात के लिए शायद
ये लकीरें बिखेर डाली हैं
कितनी ही बे-कुसूर नस्लों ने
इन को पढ़ने के जुर्म में ता-उम्र
ले के कश्कूल-ए-इल्म-ओ-हिक्मत-ओ-फ़न
कू-ब-कू जाँ की भीक माँगी है
आह ये वक्त का अजाब-ए-अलीम
वक्त ख़ल्लाक बे-शुज़र क़दीम
सारी तारीफ़ें उन अंधेरों की
जिन में परतव न कोई परछाई
आह ये जिंदगी की तन्हाई
सोचना और सोचते रहना
चंद मासूम पागलों की सजा
आज मैं ने भी सोच रक्खा है
वक्त से इंतिक्राम लेने को
यूँही ता-शाम सादे कागज पर
टेढ़े टेढ़े खुतूत खींचे जाएँ

नाकारा

कौन आया है
कोई नहीं आया है पागल
तेज हवा के झोंके से दरवाजा खुला है
अच्छा यूँ है
बेकारी में जात के ज़र्खों की सोजिश को और बढ़ाने
तेज-रवी की राहगुजर से
मेहनत-कोश और काम के दिन की
धूल आई है धूप आई है
जाने ये किस ध्यान में था मैं
आता तो अच्छा कौन आता
किस को आना था कौन आता

रातें सच्ची हैं दिन झूटे हैं

चाहे तुम मेरी बीनाई खुरच डालो फिर भी अपने ख्वाब नहीं छोड़ूँगा
उन की लज्जत और अजिय्यत से मैं अपना कोई अहद नहीं तोड़ूँगा
तेज नजर ना-बीनाओं की आबादी में
क्या मैं अपने ध्यान की ये पूँजी भी गिनवा दूँ
हाँ मेरे ख्वाबों को तुम्हारी सुहृदों की सर्द और साया-गूँ ताबीरों से नफरत है
इन सुहृदों ने शाम के हाथों अब तक जितने सूरज बेचे
वो सब इक बर्फनी भाप की चमकीली और चक्र खाती गोलाई थे
सो मेरे ख्वाबों की रातें जलती और दहकती रातें
ऐसी यख-बस्ता ताबीरों के हर दिन से अच्छी हैं और सच्ची भी हैं
जिस में धूँदला चक्र खाता चमकीला-पन छे अतराफ का रोग बना है
मेरे अंधेरे भी सच्चे हैं
और तुम्हारे "रोग उजाले" भी झूटे हैं
रातें सच्ची हैं दिन झूटे
जब तक दिन झूटे हैं जब तक
रातें सहना और अपने ख्वाबों में रहना
ख्वाबों को बहकाने वाले दिन के उजालों से अच्छा है
हाँ मैं बहकावों की धूँद नहीं ओढ़ूँगा
चाहे तुम मेरी बीनाई खुरच डालो मैं फिर भी अपने ख्वाब नहीं छोड़ूँगा
अपना अहद नहीं तोड़ूँगा
यही तो बस मेरा सब कुछ है
माह ओ साल के गारत-गर से मेरी ठनी है
मेरी जान पर आन बनी है
चाहे कुछ हो मेरे आखिरी सॉस तलक अब चाहे कुछ हो

क्रातिल

सुना है तुम ने अपने आखिरी लम्हों में समझा था
कि तुम मेरी हिफाजत में हो मेरे बाजुओं में हो
सुना है बुझते बुझते भी तुम्हारे सर्द ओ मुर्दा-लब से
एक शोला शोला-ए-याकूत-फाम ओ रंग ओ उम्मीद-ए-फरोग-ए-जिंदगी-आहंग लपका था
हमें खुद में छुपा लीजे
ये मेरा वो अजाब-ए-जॉ है जो मुझ को
मिरे अपने खुद अपने ही जहन्म में जलाता है
तुम्हारा सीनी-ए-सीमी
तुम्हारे बाजूवान-ए-मर-मरी
मेरे लिए
मुझ इक हवसनाक-ए-फरोमाया की खातिर
साज ओ सामान-ए-नशात ओ नशा-ए-इशरत-फुजूनी थे
मिरे अर्याश लम्हों की फुसूँ-गर पुर-जुनूनी के लिए
सद-लज्जत आर्गी सद-करिश्मा पुर-जबानी थे
तुम्हे मेरी हवस-पेशा
मिरी सप्फाक क्रातिल बेवफाई का गुमाँ तक
इस गुमाँ का एक वहम-ए-खुद गुरेजाँ तक नहीं था
क्यूँ नहीं था क्यूँ नहीं था क्यूँ
कोई होता कोई तो होता
जो मुझ से मिरी सप्फाक क्रातिल बेवफाई की सज्जा मैं
खून थुकवाता
मुझे हर लम्हे की सूली पे लटकाता
मगर फरियाद कोई भी नहीं कोई
दरेगा उफ्ताद कोई भी
मुझे मफरूर होना चाहिए था
और मैं सप्फाक-क्रातिल बेवफा खूँ-रेज-तर मैं
शहर में खुद-वारदाती
शहर में खुद-मस्त आजादाना फिरता हूँ
निगर-ए-खाक-आसूदा
बहार-ए-खाक-आसूदा

रम्ज़

तुम जब आओगी तो खोया हुआ पाओगी मुझे
मेरी तन्हाई में ख्वाबों के सिवा कुछ भी नहीं
मेरे कमरे को सजाने की तमन्ना है तुम्हें
मेरे कमरे में किताबों के सिवा कुछ भी नहीं
इन किताबों ने बड़ा जुल्म किया है मुझ पर
इन में इक रम्ज़ है जिस रम्ज़ का मारा हुआ जेहन
मुज्जदा-ए-इशरत-ए-अंजाम नहीं पा सकता
जिंदगी में कभी आराम नहीं पा सकता

शायद

मैं शायद तुम को यक्सर भूलने वाला हूँ
 शायद जान-ए-जाँ शायद
 कि अब तुम मुझ को पहले से जियादा याद आती हो
 है दिल गमगी बहुत गमगी
 कि अब तुम याद दिलदाराना आती हो
 शमीम-ए-दूर-माँदा हो
 बहुत रंजीदा हो मुझ से
 मगर फिर भी
 मशाम-ए-जाँ में मेरे आश्ती-मंदाना आती हो
 जुदाई में बला का इल्तिफ़ात-ए-मेहरमाना है
 क्रयामत की खबर-गीरी है
 बेहद नाज-बरदारी का आलम है
 तुम्हारे रंग मुझ में और गहरे होते जाते हैं
 मैं डरता हूँ
 मिरे एहसास के इस ख्वाब का अंजाम क्या होगा
 ये मेरे अंदरून-ए-जात के ताराज-गर
 जज्बों के बैरी वक्त की साजिश न हो कोई
 तुम्हारे इस तरह हर लम्हा याद आने से
 दिल सहमा हुआ सा है
 तो फिर तुम कम ही याद आओ
 मता-ए-दिल मता-ए-जाँ तो फिर तुम कम ही याद आओ
 बहुत कुछ बह गया है सैल-ए-माह-ओ-साल में अब तक
 सभी कुछ तो न बह जाए
 कि मेरे पास रह भी क्या गया है
 कुछ तो रह जाए

वो

वो किताब-ए-हुस्त वो इल्म ओ अदब की तालीबा
 वो मोहज्जब वो मुअद्दब वो मुकद्दस राहिबा
 किस क़दर पैराया परवर और कितनी सादा-कार
 किस क़दर संजीदा ओ खामोश कितनी बा-वकार
 गेसू-ए-पुर-खम सवाद-ए-दोश तक पहुँचे हुए
 और कुछ बिखरे हुए उलझे हुए सिमटे हुए
 रंग में उस के अजाब-ए-खीरगी शामिल नहीं
 कैफ़-ए-एहसासात की अफ़सुर्दगी शामिल नहीं
 वो मिरे आते ही उस की नुक्का-परवर खामुशी
 जैसे कोई हूर बन जाए यकायक फ़लसफ़ी
 मुझ पे किया खुद अपनी फितरत पर भी वो खुलती नहीं
 ऐसी पुर-असरार लड़की में ने देखी ही नहीं
 दुखतरान-ए-शहर की होती है जब महफ़िल कहीं
 वो तआरुफ़ के लिए आगे कभी बढ़ती नहीं

सफर के वक्त

तुम्हारी याद मिरे दिल का दाग है लेकिन सफर के वक्त तो बे-तरह याद आती हो बरस बरस की हो आदत का जब हिसाब तो फिर बहुत सताती हो जानम बहुत सताती हो मैं भूल जाऊँ मगर कैसे भूल जाऊँ भला अज्ञाब-ए-जॉ की हकीकत का अपनी अपसाना मिरे सफर के वो लम्हे तुम्हारी पुर-हाली वो बात बात मुझे बार बार समझाना ये पाँच कुर्ते हैं देखो ये पाँच पाजामे डले हुए हैं क्रमर-बंद इन में और देखो ये शेव-बॉक्स हैं और ये हैं ओलड असपाइस नहीं हुजूर की झोनजल का अब कोई बाइस ये डाइरी हैं और इस में पते हैं और नंबर इसे ख्याल से बक्से की जेब में रखना है अर्ज "हजरत-ए-ग़ाएब-दिमाग़" बंदी की कि अपने ऐब की हालत को ग़ैब में रखना ये तीन कोट हैं पतलून हैं ये टाईयां हैं बंधी हुई हैं ये सब तुम को कुछ नहीं करना ये 'वेलियम' हैं 'ओनटल' हैं और 'टरपटी-नाल' तुम इन के साथ मिरी जॉ ड्रिंक से डरना बहुत जियादा न पीना कि कुछ न याद आए जो लखनऊ में हुआ था वो अब दोबारा न हो हो तुम सुखन की अना और तमकनत जानम मजाक का किसी 'इंशा' को तुम से यारा न हो वो 'जौन' जो नजर आता है उस का जिक्र नहीं तुम अपने 'जौन' का जो तुम में है भरम रखना अजीब बात है जो तुम से कह रही हूँ मैं ख्याल मेरा जियादा और अपना कम रखना हो तुम बला के बगावत-पसंद तल्ख-कलाम खुद अपने हक्क में इक आजार हो गए हो तुम तुम्हारे सारे सहाबा ने तुम को छोड़ दिया मुझे कलक है कि बे-यार हो गए हो तुम ये बैंक-कार मैनेजर ये अपने टेक्नोक्रेट कोई भी शुबह नहीं हैं ये एक अबस का ढिढ़ोल मैं खुद भी इन को क्रो-मैग्न समझती हूँ ये शानदार जनावर हैं दफ्तरों का मखौल

मैं जानती हूँ कि तुम सुन नहीं रहे मिरी बात समाज झूट सही फिर भी उस का पास करो है तुम को तैश है बालिशतियों की ये दुनिया तो फिर कर्मने से तुम उन को बे-लिबास करो तुम एक सादा ओ बरजस्ता आदमी ठहरे मिजाज-ए-वक्त को तुम आज तक नहीं समझे जो चीज सब से जरूरी है वो मैं भूल गई ये पासपोर्ट है इस को सँभाल के रखना जो ये न हो तो खुदा भी बशर तक आ न सके सो तुम शुजर का अपने कमाल कर रखना मिरी शिक्षत के ज़ख्मों की सोजिश-ए-जावेद नहीं रहा मिरे ज़ख्मों का अब हिसाब कोई है अब जो हाल मिरा वो अजब तमाशा है मिरा अज्ञाब नहीं अब मिरा अज्ञाब कोई नहीं कोई मिरी मंज़िल प है सफर दरपेश है गर्द गर्द-ए-अबस मुझ को दर-ब-दर पेश

दरख्त-ए-ज़र्द

नहीं मालूम 'जरयून' अब तुम्हारी उम्र क्या होगी वो किन ख्याबों से जाने आशा ना-आशा होगी तुम्हारे दिल के इस दुनिया से कैसे सिलसिले होंगे तुम्हें कैसे गुम्हें होंगे तुम्हें कैसे गिले होंगे तुम्हारी सुहृ जाने किन ख्यालों से नहाती हो तुम्हारी शाम जाने किन मलालों से निमाती हो न जाने कौन दोशीजा तुम्हारी जिंदगी होगी न जाने उस की क्या बायसतगी शाइस्तगी होगी उसे तुम फोन करते और खत लिखते रहे होंगे न जाने तुम ने कितनी कम गलत उर्दू लिखी होगी ये खत लिखना तो दक्षानूस की पीढ़ी का क्रिस्सा है ये सिफ़-ए-नस्त हम ना-बालिगों के फ़न का हिस्सा है वो हँसती हो तो शायद तुम न रह पाते हो हालों में गढ़ा नन्हा सा पड़ जाता हो शायद उस के गालों में गुम्हें ये है तुम्हारी भी रसाई ना-रसाई हो वो आई हो तुम्हारे पास लेकिन आ न पाई हो वो शायद माझे की गंद विरयानी न खाती हो वो नान-ए-बे-खमीर-ए-मैदा कम-तर ही चबाती हो वो दोशीजा भी शायद दास्तानों की हो दिल-दादा उसे मालूम होगा 'जाल' था 'सोहराब' का दादा तहमतन यानी 'रुस्तम' था गिरामी 'साम' का वारिस गिरामी 'साम' था सुल्व-ए-नर-ए-'मानी' का खुश-जादा (ये मेरी एक ख्याहिश है जो मुश्किल है) वो 'नज्म'-आफ़दि-ए-मरहूम को तो जानती होगी वो नौहों के अदब का तर्ज तो पहचानती होगी उसे कद होगी शायद उन सभी से जो लपाड़ी हो न होंगे ख्याब उस का जो गवय्ये और खिलाड़ी हो हदफ होंगे तुम्हारा कौन तुम किस के हदफ होंगे न जाने वक्त की पैकार में तुम किस तरफ होंगे है रन ये जिंदगी इक रन जो बरपा लम्हा लम्हा है हमें इस रन में कुछ भी हो किसी जानिव तो होना है सो हम भी इस नफस तक हैं सिपाही एक लश्कर के हजारों साल से जीते चले आए हैं मर मर के शुहूद इक फ़न है और मेरी अदावत बे-फ़नों से है मिरी पैकार अज़ल से ये 'खुसरो' 'मीर' 'ग़ालिब' का खराबा बेचता क्या है हमारा 'ग़ालिब'-ए-आजम था चोर आका-ए-'बेदिल' का सो रिज़क-ए-फ़ख अब हम खा रहे हैं 'मीर'-ए-विस्मिल का सिधारत भी था शर्मिदा कि दो-आबे का बासी था तुम्हें मालूम है उर्दू जो है पाली से निकली है वो गोया उस की ही इक पुर-नुमू डाली से निकली है ये कड़वाहट की बातें हैं मिठास इन की न पूछो तुम नम-ए-लब को तरसती हैं सो प्यास इन की न पूछो तुम ये इक दो जुरओं की इक चुड़ा है और चुड़ा में क्या है अवाम्ब्रास से पूछो भला अल-कुँड में क्या है ये तअन-ओ-तंज की हर्जा-सराई हो नहीं सकती कि मेरी जान मेरे दिल से रिश्ता खो नहीं सकती नशा चढ़ने लगा है और चढ़ना चाहिए भी था अबस का निर्ख तो इस वक्त बढ़ना चाहिए भी था अजब बे-माजरा बे-तौर बेजाराना हालत है नशन चक्क नश्न है और नश्न नश्न नी यागन वर्नीक्कन है

गरज जो हाल था वो नफस के बाजार ही का था है "ज़" बाजार में तो दरमियाँ 'जरयून' में अब्ल तो ये इब्राफ़नीकी खेलते हफ़ौं से थे हर पल तो ये 'जरयून' जो है क्या ये अफ़लातून है कोई अमाँ 'जरयून' है 'जरयून' वो माजून क्यूँ होता हैं माजूने मुक्कीद "अर्वाह" को माजून यूँ होता सुनो तफ़रीक कैसे हो भला अश्खास ओ अश्या में बहुत जंजाल हैं पर हो यहाँ तो "या" में और "या" में तुम्हारी जो हमासा है भला उस का तो क्या कहना है शायद मुझ को सारी उम्र उस के सेहर में रहना मगर मेरे गरीब अजदाद ने भी कुछ किया होगा बहुत दुचा सही उन का भी कोई माजरा होगा ये हम जो हैं हमारी भी तो होगी कोई नौटंकी हमारा खून भी सच मुच का सेहने पर बहा होगा है आखिर जिंदगी खून अज-बुन-ए-नाखुन बर-आवर-तर क्रयामत सानेहा मतलब क्रयामत फ़ाजिआ परवर नहीं हो तुम मेरे और मेरा फ़र्द भी नहीं मेरा सो मैं ने साहत-ए-दीरोज़ में डाला है अब डेरा मेरे दीरोज़ में जहर-ए-हलाहल तेग-ए-कातिल है मेरे घर का वही सरनाम-तर है जो भी विस्मिल है गुजरत-ए-वक्त से पैमान है अपना अजब सा कुछ सो इक मामूल है इमरान के घर का अजब सा कुछ 'हसन' नामी हमारे घर में इक 'सुकरात' गुजरा है वो अपनी नफ़इ से इसबात तक माशर के पहुँचा है कि खून-ए-रायाँ के अब्र में पड़ना नहीं हम को वो सूद-ए-हाल से यकसर जियॉ-काराना गुजरा है तलब थी खून की क्य की उसे और बे-निहायत थी सो फौरन बिन्त-ए-अशआश का पिलाया पी गया होगा वो इक लम्हे के अंदर सरमदिय्यत जी गया होगा तुम्हारी अर्जुमंद अम्मी को मैं भूला बहुत दिन मैं मैं उन की रंग की तस्कीन से निमटा बहुत दिन मैं वही तो हैं जिन्हों ने मुझ को पैहम रंग शुकवाया वो किस रग का लहू है जो मियाँ मैं नय नहीं थूका लहू और थूकना उस का है कारोबार भी मेरा यही है साख भी मेरी यही मेआर भी मेरा मैं वो हूँ जिस ने अपने खून से मौसम खिलाए हैं न-जाने वक्त के कितने ही आलम आजमाए हैं मैं इक तारीख हूँ और मेरी जाने कितनी फ़सलें हैं मिरी कितनी ही फ़रए हैं मिरी कितनी ही असलें हैं हवादिस माजरा ही हम रहे हैं इक ज़माने से शादायद सानेहा ही हम रहे हैं इक ज़माने से हमेशा से बपा इक जंग है हम उस में काएम हैं हमारी जंग खैर ओ शर के विस्तर की है ज़ाईदा ये चर्ख-ए-जब्र के दब्वार-ए-मुक्किन की है गिरवीदा लड़ाई के लिए मैदान और लश्कर नहीं लाजिम सिनान ओ गुर्ज ओ शमशीर ओ तबर खंजर नहीं लाजिम बस इक एहसास लाजिम है कि हम बुआदैन हैं दिनों कि नफ़इ-ए-ऐन-ए-ऐन ओ सर-ब-सर जिद्दीन हैं दोनों Luis-Urbina ने मेरी अजब कुछ गम-गुसारी की ब-सद दिल दानिशी गुजरान अपनी मुझ पे तारी की

बहुत उस ने पिलाई और पीने ही न दी मुझ को पलक तक उस ने मरने के लिए जीने न दी मुझ को "मैं तेरे इश्क में रंजीदा हूँ हाँ अब भी कुछ कुछ हूँ मुझे तेरी खयानत ने गजब मजरुह कर डाला मगर तैश-ए-शदीदाना के ब'अद आखिर ज़माने में रजा की जाविदाना जब्र की नौबत भी आ पहुँची"

मोहब्बत एक पसपाई है पुर-अहवाल हालत की मोहब्बत अपनी यक-तौरी में दुश्मन है मोहब्बत की सुखन माल-ए-मोहब्बत की दुकान-आराई करता है सुखन सौ तरह से इक रम्ज की रुखाई करता है सुखन बकवास है बकवास जो ठहरा है फन मेरा वो है ताबीर का अफलास जो ठहरा है फन मेरा सुखन यानी लबों का फन सुखन-वर यानी इक पुर-फन सुखन-वर ईंज़र अच्छा था कि आदम या फिर अहरीमन मजीद आंकि सुखन में वक्त है वक्त अब से अब यानी कुछ ऐसा है ये मैं जो हूँ ये मैं अपने सिवा हूँ "मैं" सो अपने आप में शायद नहीं वाके हुआ हूँ मैं जो होने में हो वो हर लम्हा अपना गैर होता है कि होने को तो होने से अजब कुछ बैर होता है यूँही बस यूँही 'जेनू' ने यकायक खुद-कुशी कर ली अजब हिस्स-ए-ज़राफ़त के थे मालिक ये रवाकी भी बिदह यारा अजाँ बादा कि दहकौं पर्वद आँ-रा ब-सोज़द हर मता-ए-इन्तिमाए दूदमानाँ रा ब-सोज़द ईं ज़मीन-ए-एँतिबार-ओ-आस्मानाँ रा ब-सोज़द जान ओ दिल राहम बयासायद दिल ओ जाँ रा दिल ओ जाँ और आसाइश ये इक कौनी तमस्खुर है हुमुक की अबकरियत है सफाहत का तफ़कुर है हुमुक की अबकरियत और सफाहत के तफ़कुर ने हमें तज़ई-ए-मोहल्त के लिए अकवान बरखे हैं और अफलातून-ए-अवदस ने हमें अ'यान बरखे हैं सुनो 'जरयून' तुम तो ऐन-ए-आ'यान-ए-हकीकत हो नजर से दूर मंजर का सर-ओ-सामान-ए-सर्वत हो हमारी उम्र का किस्सा हिसाब अंदोज-ए-आनी है ज़मानी जद में जन की इक गुमान-ए-लाजिमानी है गुमाँ ये है कि बाकी है बका हर आन फ़ानी है कहानी सुनने वाले जो भी हैं वो खुद कहानी हैं कहानी कहने वाला इक कहानी की कहानी है पिया पे ये गदाजिश ये गुमाँ और ये गिले कैसे सिला-सोजी तो मेरा फन है फिर इस के सिले कैसे तो मैं क्या कह रहा था यानी क्या कुछ सह रहा था मैं अमाँ हॉ मैज पर या मैज पर से बह रहा था मैं रुको मैं बे-सर-ओ-पा अपने सर भाग निकला हूँ इला या अय्युहल-अबज़द ज़रा यानी ज़रा ठहरो There is an absurd! इन absurdity शायद कहीं अपने सिवा यानी कहीं अपने सिवा ठहरो तुम इस absurdity में इक रदीफ़ इक काफ़िया ठहरो रदीफ़ ओ काफ़िया क्या हैं शिकस्त-ए-ना-रवा क्या है शिकस्त-ए-नारवा ने मुझ को पारा पारा कर डाला अना को मेरी बे-अंदाजा-तर बे-चारा कर डाला मैं अपने आप मैं हारा हूँ और ख्वाराना हारा हूँ

जिगर-चाकाना	हारा हूँ	दिल-अफगाराना	हारा हूँ
जिसे फन कहते आए हैं वो है खून-ए-जिगर अपना		मगर खून-ए-जिगर क्या है वो है कत्ताल-तर अपना	
कोई खून-ए-जिगर का फन जरा ताबीर में लाए		मगर मैं तो कहूँ वो पहले मेरे सामने आए	
वजूद ओ शेर ये दोनों define हो नहीं सकते		कभी मफ्हूम में हरगिज ये काइन हो नहीं सकते	
हिसाब-ए-हर्फ़ में आता रहा है बस हसब उन का		हिसाब-ए-हर्फ़ में आता रहा है बस हसब उन का	
नहीं मालूम ईंज़द ईंज़दों को भी नसब उन का		है ईंज़द ईंज़दों इक रम्ज जो बे-रम्ज निस्बत है	
है न जाने जब्र है हालत कि हालत जब्र है यानी		मियॉ इक हाल है इक हाल जो बे-हाल-ए-हालत है	
किसी भी बात के मअनी जो हैं उन के हैं क्या मअनी		न जाने जब्र है हालत कि हालत जब्र है यानी	
वजूद इक जब्र है मेरा अदम औकात है मेरी		किसी भी बात के मअनी जो हैं उन के हैं क्या मअनी	
जो मेरी जात हरगिज भी नहीं वो जात है मेरी		वजूद इक जब्र है मेरा अदम औकात है मेरी	
मैं रोज़-ओ-शब निगारिश-कोश खुद अपने अदम का हूँ		जो मेरी जात हरगिज भी नहीं वो जात है मेरी	
मैं अपना आदमी हरगिज नहीं लौह-ओ-क्लम का हूँ		मैं अपना आदमी हरगिज नहीं लौह-ओ-क्लम का हूँ	
हैं कड़वाहट में ये भीगे हुए लम्हे अजब से कुछ		हैं कड़वाहट में ये भीगे हुए लम्हे अजब से कुछ	
सरासर बे-हिसाबाना सरासर बे-सबब से कुछ		सरासर बे-हिसाबाना सरासर बे-सबब से कुछ	
सराबों ने सराबों पर बहुत बादल हैं बरसाए		सराबों ने सराबों पर बहुत बादल हैं बरसाए	
शराबों ने मआबद के तमूज ओ बअल नहलाए		शराबों ने मआबद के तमूज ओ बअल नहलाए	
(यकीनन काफ़िया है यावा-फरमाई का सर-चश्मा		(यकीनन काफ़िया है यावा-फरमाई का सर-चश्मा	
"हैं नहलाए"		"हैं नहलाए"	
			"बरसाए")
न जाने आरिबा क्यूँ आए क्यूँ मुस्तारबा आए		न जाने आरिबा क्यूँ आए क्यूँ मुस्तारबा आए	
मुजिर के लोग तो छाने ही वाले थे सो वो छाए		मुजिर के लोग तो छाने ही वाले थे सो वो छाए	
मिरे जद हाशिम-ए-आली गए गुज्जा में दफ़नाए		मिरे जद हाशिम-ए-आली गए गुज्जा में दफ़नाए	
मैं नाके को पिलाऊँगा मुझे वाँ तक वो ले जाए		मैं नाके को पिलाऊँगा मुझे वाँ तक वो ले जाए	
लिदू लिलमौती वबनू लिलहिजाबी सन खराबाती		लिदू लिलमौती वबनू लिलहिजाबी सन खराबाती	
वो मर्द-ए-उस कहता है हक़ीकित है खुराफ़ाती		वो मर्द-ए-उस कहता है हक़ीकित है खुराफ़ाती	
ये जालिम तीसरा पैग इक अकानीमी बिदायत है		ये जालिम तीसरा पैग इक अकानीमी बिदायत है	
उलूही हर्ज़ा-फरमाई का सिर-ए-तूर-ए-लुक्रत है		उलूही हर्ज़ा-फरमाई का सिर-ए-तूर-ए-लुक्रत है	
भला हूरब की झाड़ी का वो रम्ज-ए-आतिशी क्या था		भला हूरब की झाड़ी का वो रम्ज-ए-आतिशी क्या था	
मगर हूरब की झाड़ी क्या ये किस से किस की निस्बत है		मगर हूरब की झाड़ी क्या ये किस से किस की निस्बत है	
ये निस्बत के बहुत से क़ाफ़िए हैं हैं गिला इस का		ये निस्बत के बहुत से क़ाफ़िए हैं हैं गिला इस का	
मगर तुझ को तो यारा! क़ाफ़ियों की बे-तरह लत है		मगर तुझ को तो यारा! क़ाफ़ियों की बे-तरह लत है	
गुमाँ ये है कि शायद बहर से खारिज नहीं हूँ मैं		गुमाँ ये है कि शायद बहर से खारिज नहीं हूँ मैं	
ज़रा भी हाल के आहंग मैं हारिज नहीं हूँ		ज़रा भी हाल के आहंग मैं हारिज नहीं हूँ	
तना-तन तन तना-तन तन तना-तन तन तना-तन तन		तना-तन तन तना-तन तन तना-तन तन तना-तन तन	
तना-तन तन नहीं मेहनत-कशों का तन न पैराहन		तना-तन तन नहीं मेहनत-कशों का तन न पैराहन	
न पैराहन न पूरी आधी रोटी अब रहा सालन		न पैराहन न पूरी आधी रोटी अब रहा सालन	
ये साले कुछ भी खाने को न पाएँ गालियॉ खाएँ		ये साले कुछ भी खाने को न पाएँ गालियॉ खाएँ	
है इन की बे-हिसी में तो मुकद्दस-तर हरामी-पन		है इन की बे-हिसी में तो मुकद्दस-तर हरामी-पन	
मगर आहंग मेरा खो गया शायद कहूँ जाने		मगर आहंग मेरा खो गया शायद कहूँ जाने	
कोई मौज-ए-... कोई मौज-ए-शुमाल-ए-जावेदौं जाने		कोई मौज-ए-... कोई मौज-ए-शुमाल-ए-जावेदौं जाने	
शुमाल-ए-जावेदौं के अपने ही किस्से थे जो गुजरे		शुमाल-ए-जावेदौं के अपने ही किस्से थे जो गुजरे	
वो हो गुजरे तो फिर खुद मैं ने भी जाना वो हो गुजरे		वो हो गुजरे तो फिर खुद मैं ने भी जाना वो हो गुजरे	
शुमाल-ए-जावेदौं अपना शुमाल-ए-जावेदौं जॉ		शुमाल-ए-जावेदौं अपना शुमाल-ए-जावेदौं जॉ	
है अब भी अपनी पूँजी इक मलाल-ए-जावेदान-ए-जॉ		है अब भी अपनी पूँजी इक मलाल-ए-जावेदान-ए-जॉ	
नहीं मालूम 'जरयून' अब तुम्हारी उम्र क्या होगी		नहीं मालूम 'जरयून' अब तुम्हारी उम्र क्या होगी	

यहो हैं दिल का मजमून अब तुम्हारी उम्र क्या होगी
हमारे दरभियाँ अब एक बेजा-तर जमाना है
लब-तिश्रा पे इक जहर-ए-हकीकत का फसाना है
अजब फुर्सत मयस्सर आई है "दिल जान रिश्ते" को
न दिल को आजमाना है न जॉ को आजमाना है
कलीद-ए-किश्त-जार-ए-ख्वाब भी गुम हो गई आखिर
कहाँ अब जादा-ए-खुर्रम में सर-सज्जाना जाना है
कहूँ तो क्या कहूँ मेरा ये जरूर-ए-जावेदाना है
वही दिल की हकीकत जो कभी जॉ थी वो अब आखिर
फसाना दर फसाना दर फसाना दर फसाना है
हमारा बाहमी रिश्ता जो हासिल-तर था रिश्तों का
हमारा तौर-ए-बे-जारी भी कितना वालिहाना है
किसी का नाम लिक्खा है मिरी सारी बयाजों पर
मैं हिम्मत कर रहा हूँ यानी अब उस को मिटाना है
ये इक शाम-ए-अजाब-ए-बे-सरोकाराना हालत है
हुए जाने की हालत में हूँ बस फुर्सत ही फुर्सत है
नहीं मालूम तुम इस वक्त किस मालूम में होगे
न जाने कौन से मअनी में किस मफ्हूम में होगे
मैं था मफ्हूम ना-मफ्हूम में गुम हो चुका हूँ मैं
मैं था मालूम ना-मालूम में गुम हो चुका हूँ मैं
नहीं मालूम 'जरयून' अब तुम्हारी उम्र क्या होगी
मिरे खुद से गुजरने के जमाने से सवा होगी
मिरे क्रामत से अब क्रामत तुम्हारा कुछ फुर्जू होगा
मिरा फर्दा मिरे दीरोज से भी खुश नुमूँ होगा
हिसाब-ए-माह-ओ-साल अब तक कभी रखता नहीं मैं ने
किसी भी फस्ल का अब तक मजा चक्खा नहीं मैं ने
मैं अपने आप मैं कब रह सका कब रह सका आखिर
कभी इक पल को भी अपने लिए सोचा नहीं मैं ने
हिसाब-ए-माह-ओ-साल ओ रोज़-ओ-शब वो सोख्ता-बूदश
मुसलसल जॉ-कनी के हाल में रखता भी तो कैसे
जिसे ये भी न हो मालूम वो है भी तो क्यूँ-कर है
कोई हालत दिल-ए-पामाल में रखता भी तो कैसे
कोई निस्वत भी अब तो जात से बाहर नहीं मेरी
कोई बिस्तर नहीं मेरा कोई चादर नहीं मेरी
ब-हाल-ए-ना-शिता सद-जरूर-हा ओ खून-हा खूर्दम
ब-हर-दम शूकरौं आमेख्ता माजून-हा खूर्दम
तुम्हें इस बात से मतलब ही क्या और आखिरश क्यूँ हो
किसी से भी नहीं मुझ को गिला और आखिरश क्यूँ हो
जो है इक नंग-ए-हस्ती उस को तुम क्या जान भी लोगे
अगर तुम देख लो मुझ को तो क्या पहचान भी लोगे
तुम्हें मुझ से जो नफरत है वही तो मेरी राहत है
मिरी जो भी अजिय्यत है वही तो मेरी लज्जत है
कि आखिर इस जहाँ का एक निजाम-ए-कार है आखिर
जजा का और सजा का कोई तो हंजार है आखिर
मैं खुद मैं झेंकता हूँ और सीने मैं भड़कता हूँ
मिरे अंदर जो है इक शख्स मैं उस मैं फड़कता हूँ
है मेरी जिदगी अब रोज़-ओ-शब यक-मज्जिस-ए-गम-हा
अजा-हा मर्सिया-हा गिर्या-हा आशोब-ए-मातम-हा
तुम्हारी तर्बियत मैं मेरा हिस्सा कम रहा कम-तर
जबॉ मेरी तम्हारे वास्ते शायद कि मशिकल हो

जबा अपना जबा मैं तुम का आखर कब सखा पाया
अजाब-ए-सद-शमातत आखिरश मुझ पर ही नाजिल हो
जबॉ का काम यूँ भी बात समझाना नहीं होता
समझ में कोई भी मतलब कभी आना नहीं होता
कभी खुद तक भी मतलब कोई पहुँचाना नहीं होता
गुमानों के गुमाँ की दम-ब-दम आशोब-कारी है
भला क्या ए'तिबारी और क्या ना-ए'तिबारी है
गुमाँ ये है भला मैं जुज गुमाँ क्या था गुमानों में
सुखन ही क्या फसानों का धरा क्या है फसानों में
मिरा क्या तजिकरा और वाकई क्या तजिकरा मेरा
मैं इक अफ्सोस था अफ्सोस हूँ गुजरे जमानों में
है शायद दिल मिरा बे-जरूर और लब पर नहीं छाले
मिरे सीने मैं कब सोजिंदा-तर दागों के हैं थाले
मगर दोजख पिघल जाए जो मेरे साँस अपना ले
तुम अपनी माम के बेहद मुरादी भिन्नतों वाले
मिरे कुछ भी नहीं कुछ भी नहीं कुछ भी नहीं बाले
मगर पहले कभी तुम से मिरा कुछ सिलसिला तो था
गुमाँ मैं मेरे शायद इक कोई गुंचा खिला तो था
वो मेरी जावेदाना बे-दुई का इक सिला तो था
सो उस को एक अबू नाम का घोड़ा मिला तो था
साया-ए-दामान-ए-रहमत चाहिए थोड़ा मुझे
मैं न छोड़ूँ या नबी तुम ने अगर छोड़ा मुझे
ईद के दिन मुस्तफा से यूँ लगे कहने 'हुसैन'
सब्ज जोड़ा दो 'हसन' को सुर्ख दो जोड़ा मुझे
"अदब अदब कुर्ते तिरे कान काढ़ै
'जरयून' के ब्याह के नान बाढ़ै"
तारों भरे जगर जगर ख्वान बाढ़ै
"आ जा री निन्दिया तू आ क्यूँ न जा
'जरयून' को आ के सुला क्यूँ न जा"
तुम्हारे ब्याह में शजरा पढ़ा जाना था नौशा वास्ती दूल्हा
"चौकी आँगन मैं बिछी वास्ती दूल्हा के लिए"
मके मटीने के पाक मुसल्ले पयम्बर घर नवासे
शाह-ए-मर्दा अमीर-ऊल-मोमिनी हजरत-'अली' के पोते
हजरत इमाम-'हसन' हजरत इमाम-'हुसैन' के पोते
हजरत इमाम-'अली-'नकी' के पोते
सर्यद-'जाफर' सानी के पोते
सर्यद अबुल-फरह सैदवाइल-वास्ती के पोते
मीराँ सर्यद-'अली'-बुजुर्ग के पोते
सर्यद-'हुसैन'-शरफुद्दीन शाह-विलायत के पोते
क़ाज़ी सर्यद-'अमीर'-अली के पोते
दीवान सर्यद-'हामिद' के पोते
अलामा सर्यद-'शफ़ीक'-हसन-एलिया के पोते
सर्यद-'जौन'-एलिया हसनी-उल-हुसैनी सपूत-जाह"
मगर नाजिर हमारा सोख्ता-सुल्ब आखिरी नस्साब अब मरने ही वाला है
बस इक पल हफ़्ते सदी का फ़ैसला करने ही वाला है
सुनो 'जरयून' बस तुम ही सुनो यानी फ़क्त तुम ही
वही राहत मैं है जो आम से होने को अपना ले
कभी कोई भी पर हो कोई 'बहमन' यार या 'जेनू'
तुम्हें बहका न पाए और बैरनी न कर डाले
मैं सारी जिदगी के दख भगत कर तम से कहता हूँ

बहुत दुख देगी तुम में फिक्र और फन की नुमू मुझ को तुम्हारे वास्ते बेहद सहूलत चाहता हूँ मैं दवाम-ए-जहल ओ हाल-ए-इस्तिराहत चाहता हूँ मैं न देखो काश तुम वो खबाब जो देखा किया हूँ मैं वो सारे खबाब थे क्रस्साब जो देखा किया हूँ मैं खराश-ए-दिल से तुम बे-रिश्ता बे-मक्तुर ही ठहरो मिरे जहमीम-ए-जात-ए-जात से तुम दूर ही ठहरो कोई 'जरयून' कोई भी कुर्क और कोई कारिदा कोई भी बैंक का अफसर सेनेटर कोई पावंदा हर इक हैवान-ए-सरकारी को टट्टु जानता हूँ मैं सो जाहिर है इसे शय से जियादा मानता हूँ मैं तुम्हें हो सुह-दम तौफीक बस अखबार पढ़ने की तुम्हें ऐ काश बीमारी न हो दीवार पढ़ने की अजब है 'सात्र' और 'रसेल' भी अखबार पढ़ते थे वो मालूमात के मैदान के शौकीन बूढ़े थे नहीं मालूम मुझ को आम शहरी कैसे होते हैं वो कैसे अपना बंजर नाम बंजर-पन में बोते हैं मैं 'उर्र' से आज तक इक आम शहरी हो नहीं पाया इसी बाइस में हूँ अम्बोह की लज्जत से बे-माया मगर तुम इक दो-पाया रास्त कामत हो के दिखलाना सुनो राय-दहिंदा बिन हुए तुम बाज मत आना फक्त 'जरयून' हो तुम यानी अपना साबिका छोड़ो फक्त 'जरयून' हो तुम यानी अपना लाहिका छोड़ो मगर मैं कौन जो चाहूँ तुम्हारे बाब में कुछ भी भला क्यूँ हो मिरे एहसास के अस्वाब में कुछ भी तुम्हारा बाप यानी मैं अबस में इक अबस-तर मैं मगर मैं यानी जाने कौन अच्छा मैं सरासर मैं कासा-बाज ओ कीना-साज ओ कासा-तन हूँ कुत्ता मैं इक नंगीन-ए-बूदश हूँ प तुम तो सिर-ए-मुनअम हो तुम्हारा बाप रुहुल-कुदस था तुम इन्ब-ए-मरयम हो ये कुलकुल तीसरा पैग अब तो चौथा हो गुमाँ ये हैं गुमाँ का मुझ से कोई खास रिश्ता हो गुमाँ ये हैं गुमाँ ये हैं कि मैं जो जा रहा था आ रहा हूँ मैं मगर मैं आ रहा कब हूँ पियापे जा रहा हूँ मैं ये चौथा पैग हैं ऊँ-हूँ जलालत की गई मुझ से जलालत की गई मुझ से ख्यानत की गई मुझ से जोजामी हो गई 'वज्जाह' की महबूब वाईला मगर इस का गिला क्या जब नहीं आया कोई एंला सुनो मेरी कहानी पर मियाँ मेरी कहानी किया मैं यकसर रायगानी हूँ हिसाब-ए-रायगानी किया बहुत कुछ था कभी शायद पर अब कुछ भी नहीं हूँ मैं न अपना हम-नफस हूँ मैं न अपना हम-नशी हूँ मैं कभी की बात है फरियाद मेरा वो कभी यानी नहीं इस का कोई मतलब नहीं इस के कोई मअनी मैं अपने शहर का सब से गिरामी नाम लड़का था मैं बे-हंगाम लड़का था मैं सद-हंगाम लड़का था मिरे दम से गजब हंगामा रहता था मोहल्लों मैं हश-आगाज लड़का था मैं हश-अंजाम लड़का था मिरे हिन्दू मुसलमाँ सब मुझ सर पर बिठाते थे उन्हीं के फैज़ से मअनी मुझे मअनी सिखाते थे सख्न बहता चला आता है बे-बाइस के होटों से

वो कुछ कहता चला आता है बे-बाइस के होटों से मैं अशराफ-ए-कमीना-कार को ठोकर पे रखता था सो मैं मेहनत-कशों की जूतियाँ मिवर पे रखता था मैं शायद अब नहीं हूँ वो मगर अब भी वही हूँ मैं गजब हंगामा-परवर खीरा-सरा अब भी वही हूँ मैं मगर मेरा था इक तौर और भी जो और ही कुछ था मगर मेरा था इक दौर और भी जो और ही कुछ था मैं अपने शहर-ए-इत्म-ओ-फन का था इक नौजवाँ काहिन मिरे तिल्मीज़-ए-इत्म-ओ-फन मिरे बाबा के थे हम-सिन मिरा बाबा मुझे खामोश आवाज़े सुनाता था वो अपने-आप मैं गुम मुझ को पुर-हाली सिखाता था वो हैअत-दाँ वो आलिम नाफ-ए-शब मैं छत पे जाता था रसद का रिश्ता सर्यारों से रखता था निभाता था उसे ख्याहिश थी शोहरत की न कोई हिस-ए-दौलत थी बड़े से कुत्र की इक दूरबीन उस की जरूरत थी मिरी माँ की तमत्राओं का कातिल था वो कङ्गामा मिरी माँ मेरी महबूबा क्रयामत की हसीना थी सितम ये हैं ये कहने से झिजकता था वो फहमामा था बेहद इश्तिआल-अंगेज बद-क्रिमत ओ अक्षामा खलफ उस के खज़फ और बे-निहायत ना-खलफ निकले हम उस के सारे बेटे इंतिहाई बे-शरफ निकले मैं उस आलिम-तरीन-ए-दहर की फिक्रत का मुनकिर था मैं फसताई था जाहिल था और मंतिक का माहिर था पर अब मेरी ये शोहरत है कि मैं बस इक शराबी हूँ मैं अपने दूदमान-ए-इत्म की खाना-खराबी हूँ सगान-ए-खूक जाद-ए-बर्जन ओ बाजार-ए-बे-मग्जी मिरी जानिब अब अपने थोबड़े शाहाना करते हैं जिना-जादे मिरी इज्जत भी गुस्ताखाना करते हैं कमीने शर्म भी अब मुझ से बे-शर्माना करते थे मुझे इस शाम है अपने लबों पर इक सुखन लाना 'अली' दरवेश था तुम उस को अपना जद न बतलाना वो सिक्कैन-ए-मोहम्मद, जिन को जाने क्यूँ बहुत अरफ़ा तुम उन की दूर की निस्बत से भी यकसर मुकर जाना कि इस निस्बत से जहर ओ जख्म को सहना जरूरी है अजब गैरत से गल्लीदा-ब-खूँ रहना जरूरी है वो शजरा जो कनाना फहर गालिब कअब मर्द से कुसइ ओ हाशिम ओ शेवा अबू-तालिब तक आता था वो इक अंदोह था तारीख का अंदोह-ए-सोजिदा वो नामों का दरखत-ए-जर्द था और उस की शाखों को किसी तन्त्रुर के हैजम की खाकिस्तर ही बनना था उसे शोला-जदा बूदश का इक बिस्तर ही बनना था हमारा फ़ख था फ़क्र और दानिश अपनी पूँजी थी नसब-नामों के हम ने कितने ही परचम लपेटे हैं मिरे हम-शहर 'जरयून' इक फुसूँ है नस्ल, हम दोनों फक्त आदम के बेटे हैं फक्त आदम के बेटे हैं मैं जब औसान अपने खोने लगता हूँ तो हँसता हूँ मैं तुम को याद कर के रोने लगता हूँ तो हँसता हूँ हमेशा मैं खुदा हाफिज हमेशा मैं खुदा हाफिज खुदा हाफिज खुदा हाफिज